12

विश्वास की अजब सामर्थ
(12:1-29)

पुराने नियम के परमेश्वर के महान सेवकों पर ध्यान करने के बाद (अध्याय 11) लेखक उस वर्तमान चाल की ओर आया, जिसमें इब्रानी लोग चल रहे थे। वे विश्वास के साथ विजय, आग और कष्टों में से गुज़र कर चलने वालों से प्रोत्साहन ले सकते थे। मसीही जीवन भी विश्वास से चलना ही है, परन्तु इसे यहां पर दौड़ी जाने वाली दौड़ के रूप में दिखाया गया है। कालांतर के विश्वास के नायकों और नायिकाओं की मुख्य विशेषता धीरज से विश्वासी रहना था और यही गुण मसीही युग के विश्वासियों में दिखाया गया है। हमारा फोकस मसीह पर और जो कुछ उसने सहा, उस पर है।

हमारे विश्वास का सिद्ध करने वाला मसीह (12:1-3)

[1]इस कारण जब कि गवाहों का ऐसा बड़ा बादल हम को घेरे हुए है, तो आओ, हर एक रोकनेवाली वस्तु, और उलझाने वाले पाप को दूर करके, वह दौड़ जिसमें हमें दौड़ना है, धीरज से दौड़ें। [2]और विश्वास के कर्त्ता और सिद्ध करने वाले यीशु की ओर ताकते रहें; जिसने उस आनन्द के लिए जो उसके आगे धरा था, लज्जा की कुछ चिन्ता न करके, क्रूस का दुःख सहा; और परमेश्वर के सिंहासन की दाहिने ओर जा बैठा।

[3]इसलिए उस पर ध्यान करो, जिसने अपने विरोध में पापियों का इतना विरोध सह लिया, कि तुम निराश होकर साहस न छोड़ दो।

आयत 1. इस दौड़ में जिसके अनन्त परिणाम हैं, हम रोकने वाली किसी भी बात को रोड़ा न बनने दें। विश्वास की दौड़ भावनात्मक होने या यह सोचने से कहीं बढ़कर है कि हमारे किसी ''अनुभव'' से हमारा उद्धार हुआ है। यह काम करने वाला जीवन है, जिसे यहां कठिन दौड़ के रूप में दिखाया गया है।[1] मसीही दौड़ चाहे अद्भुत है परन्तु कई बार इसमें बने रहना कठिन होता है।

आयत 1 में इस कारण (*toigaroun*) यह दिखाता है कि यह भाग कई विश्वासियों के उदाहरणों पर जिनकी चर्चा पहले की गई थी आधारित निष्कर्ष निकालता है।

martus से लिया गया गवाहों के लिए शब्द, अंग्रेज़ी भाषा में ''martyr'' बन गया। नये नियम में *martus* शब्द का अर्थ विश्वास के लिए मरने वाला व्यक्ति नहीं है; परन्तु कइयों का मानना है कि यहां इसका अर्थ इसी दिशा में होने लगा, और तीसरी सदी तक ऐसा अर्थ आम हो गया था।[2] शहादत का विचार अपने विश्वास के लिए मरने वाले पहले चेले के उल्लेख से आसानी से लिया जाता है जिसमें प्रेरितों 22:20 ध्यान दिलाता है कि ''जब तेरे

गवाह [*martus*] स्तिफनुस का लहू बहाया जा रहा था।" प्रकाशितवाक्य 2:13 में अन्तिपास को भी "मेरा विश्वासयोग्य *साक्षी* [*martus*]" जिसे "तुम्हारे बीच घात किया गया" कहा गया है। यदि "गवाह" में पहले ही शहादत का विचार था तो यह वाक्य रचना अनावश्यक है। प्रकाशितवाक्य 17:6 में "यीशु के *गवाहों* का लहू" वाक्यांश में ***martus*** शब्द का इस्तेमाल हुआ है। KJV में अनुचित रूप में बाद वाला अर्थ देते हुए इस शब्द को "martyrs" अनुवाद किया गया है।

नये नियम में ***martus*** शब्द का इस्तेमाल कहीं भी "दर्शक" के अर्थ में नहीं हुआ है,[3] परन्तु "रंगशाला में दर्शकों के विचार को निकाल देना असम्भव है।"[14] अध्याय 11 में बताए गए लोगों को दर्शकों के रूप में देखना इस दौड़ में दौड़ने वालों को प्रोत्साहित करने वाले शोर के विचार का सुझाव देता है, परन्तु इस वचन में निजी तौर पर बोलने के विचार का इरादा नहीं था। यह बाहर से खड़े होकर शोर मचाने वाले लोग नहीं थे बल्कि विश्वास के इन आदर्शों की गवाही पवित्रशास्त्र में दी गई है। उनके जीवन गवाही देते हैं, क्योंकि वे "निर्भय होकर विश्वास को दिखाने वाले" लोग थे "और अपनी गवाही से उन्होंने वचन के द्वारा जय पाई है (देखें प्रकाशितवाक्य 12:11)।"[15] हाबिल जैसे गवाहों की तरह, जिनकी "गवाही" (***martureō***) परमेश्वर ने दी, अन्त तक विश्वासी बने रहने की वास्तविक सम्भावना के लिए प्रोत्साहन और गवाही देते हैं।

इस वाक्य में गवाहों के बड़े बादल द्वारा हमको "घेरे" होने को वर्तमान काल में दिखाया जाने का अर्थ यह लगता है कि अध्याय 11 में बताए गए लोग प्रोत्साहन देने वाले के साथ-साथ दर्शक भी हैं। परन्तु इस संदर्भ में पवित्र शास्त्र में से देखते हुए पाठक ही कालांतर के विश्वासियों के दर्शक थे। कमजोरी के बावजूद उनकी विजयों से मसीही लोगों के लिए मानने के लिए संघर्ष करने के ज़बर्दस्त उदाहरण थे।

पौलुस मसीही जीवन को आम तौर पर एक दौड़ के रूप में दिखाता था (देखें 1 कुरिन्थियों 9:24; 2 तीमुथियुस 2:5) जिसमें नियमों के अनुसार दौड़ना आवश्यक है। इब्रानियों की पुस्तक का लेखक अलंकारिक रूप में अपने पाठकों को खेल के मैदान में ले गया जिससे हम एक युवक के रूप में उसके स्वयं वहां समय बिताने की कल्पना कर सकते हैं। उसके मन में 10:36 वाली बात हो सकती है जहां साहस (***hupomonē***) अन्त तक धावक के भागते के रहने से अथक प्रयास का सुझाव देता है। यूनानी शासन के समय में आरम्भ होने वाली कई खेलें यहूदिया में भी प्रसिद्ध थीं। अधिकतर यूनानी खेलों के मुकाबले होते थे जिनमें साहस मुख्य बात होती थी।[6] "दौड़" के लिए यूनानी शब्द (***agōn***) जो अंग्रेज़ी भाषा में "***agonize***", बन गया, चलते रहने वाले संघर्ष का संकेत है। बेशक मसीही दौड़ में संघर्ष पाप के विरुद्ध है।

हर एक रोकने वाली वस्तु ... को दूर करके धावक के अपने प्रशिक्षण के दौरान भार ले जाने की कल्पना है। दौड़ने के लिए उसने सारे भार को हटा देना होता था। "रोकनेवाली वस्तु" (***ogkos***) में धावक के रास्ते में आने वाली हर बाधा हो सकती है। **उलझानेवाले** का अर्थ अपने आप ही मिलता है। यह मूसा जैसे व्यक्ति को दिखाता है जिसने परमेश्वर की बड़ी महिमा के लिए इस संसार के धन और शान को छोड़ दिया (11:24-26)। हमें उसके नमूने का अनुसरण करना चाहिए।

''रोकनेवाली'' (''भार''; KJV) और ''पाप'' (*hamartia*) क्या है? ''रोकनेवाली वस्तु'' कोई भी चीज़ हो सकती जो हमारा ध्यान हमारे असली फोकस से हटाती है। ''पाप'' का अर्थ परमेश्वर का खुला विरोध हो सकता है।[7] इन शब्दों में वासना, घमण्ड या किसी भी ऐसी बात सहित जो मसीही धावक के लिए बाधा हो, पाप का कोई भी भार शामिल हो सकता है। ब्रूस ने कहा है, ''हमारा लेखक वाक्यांश के सामान्य अर्थ में किसी विशेष 'रोकने वाले पाप' की नहीं बल्कि पाप की बात ऐसे कर रहा है, जैसे धावक के पांवों को रोकने वाला वही हो। ...''[8] यह ताड़ना किसी भी पाप के लिए हो सकती है जो सक्रिय विश्वास को हानि पहुंचाता हो। यह मान कर कि केवल दूसरों का पाप ही खराब है। हम अपने जीवनों में पाप को छोड़ नहीं सकते। परमेश्वर के सामने हर प्रकार का पाप घृणित है और उसकी दृष्टि में कोई भी पाप मामूली नहीं है।

एक लेखक ने सुझाव दिया कि इब्रानियों की पुस्तक में अविश्वास व्यक्ति का पाप मुख्य विषय है।[9] अविश्वास परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं में भरोसे की कमी है। अविश्वास पूर्ण विश्वासत्याग का कारण बन सकता है, जो इब्रानियों की पुस्तक के आरिम्भक पाठकों के लिए वास्तविक खतरा था (देखें 6:4-6; 10:26-29)। यह ऐसा बरकरार रहने वाला खतरा है कि मसीह की निंदा को जो उसने क्रूस पर सही, दूसरों को बताकर इससे बचने का प्रयास किया जाना आवश्यक है (आयत 2)।

धीरज से दौड़ें धैर्य और दृढ़ता के साथ बने रहने की एक बुलाहट है। यदि धावक दौड़ को पूरा नहीं करता तो कुछ भी जीत नहीं मिलती। मसीही जीवन में ऐसा ही है। यदि हम भलाई करते हुए हार मान लें और अपनी मसीही दौड़ के अंत से पहले रुक जाएं तो हम अनन्त महिमा की उम्मीद नहीं कर सकते (गलातियों 6:9)। हमें याद रखना आवश्यक है कि हमारे पास छोटी दौड़ नहीं है बल्कि यह वह दौड़ है जिसमें अन्त तक दौड़ने के लिए समय और प्रयास लगाना आवश्यक है। बहुत से लोग जो अब शारीरिक रूप से सक्रिय नहीं हो सकते, परन्तु दिल से दौड़ते जा रहे हैं। बूढ़े पवित्र लोग जो सेवा के उन कामों को करने के लिए जिन्हें वे कभी करते थे, थक गए हैं या कमज़ोर पड़ गए हैं। जब शारीरिक कौशल मसीही लोगों का साथ नहीं देता तो भी परमेश्वर को इस बात का ध्यान होता है कि उनके दिल में क्या है। (1 राजाओं 8:18 से तुलना करें।)

आयत 2. सबसे बड़ा प्रोत्साहन विश्वास के कर्त्ता और सिद्ध करने वाले यीशु को ताकने से मिलता है।[10] मसीह ने पाप करने के प्रत्येक भार और परीक्षा को उतार दिया ताकि वह हमारा धन्य उद्धारक बन सके। हमें **यीशु की ओर ताकते** रहकर नज़रें उसी पर लगाए रखनी चाहिए। ''ताकने'' (*aphoraō* से) शब्द में विचार ''पक्के या मज़बूत होने'' का है। हमें ''अपनी नज़रें अन्य बातों से हटाकर किसी और बात पर'' अर्थात उससे महत्वपूर्ण पर यानी मसीह अपने प्रभु पर लगाना आवश्यक हैं।[11] हमारे जीवन केमानने के लिए नमूने के रूप में परमेश्वर ने मसीह का नमूना दिया है, क्योंकि उसका जीवन और शिक्षा सम्पूर्ण है। उसके उदाहरण के द्वारा जो उसके आने से पहले नहीं था, हमारे पास शक्ति का स्रोत है। उसका कष्ट अन्य शहीदों के कष्ट से कहीं बढ़कर है; इसलिए कि अपने बोझ असहनीय लगने पर पाठक उसको ताक सकते थे। ''उनका मजाक उड़ाया जा सकता था, उन पर हमला किया जा सकता था, उन्हें कोड़े मारे जा सकते थे,

त्यागा जा सकता था, मुखबिरों द्वारा पकड़वाया जा सकता था, कैद किया जा सकता था, झूठा आरोप लगाया जा सकता था और मार भी डाला जा सकता था– परन्तु उसके साथ तो ऐसा ही हुआ था।''[12]

हमें न तो दाएं न बाएं और न पीछे को, बल्कि यीशु की ओर देखना आवश्यक है (लूका 9:62)। वह हमारे विश्वास का ''कर्त्ता''[13] है जिसने ''एक नया और जीवित मार्ग'' (इब्रानियों 10:19) खोल दिया है। वह ''सिद्ध करनेवाला'' है जिसका अर्थ है कि विश्वास के द्वारा उस उद्धार को जिसकी उम्मीद पुरानी वाचा में केवल प्रत्याशित थी, पूरा किया। इसलिए वह हमें ''सिद्धता'' दिलाता है जो पुराना नियम नहीं दिला सकता था (10:1)। कुछ लोग इसका अनुवाद इस अर्थ में करते हैं कि यीशु हमें हमारा विश्वास देता है और इसे सिद्ध करता है। जबकि, बाइबल संकेत देती है कि ऐसा विश्वास परमेश्वर के वचन को सुनने से आता है। विश्वास को सिद्धता केवल मसीह में मिलती है जिसका अर्थ है कि वह विश्वास का सर्वोच्च प्रेरक है।[14] विश्वास में हमारे चलने के लिए वह सिद्ध उदाहरण है।

यूनानी धर्मशास्त्र में ''विश्वास'' के लिए उपपद ''the'' पहले शब्द हमारी विश्वास के स्रोत का सुझाव दे सकते हैं। हमारा ''विश्वास'' यथार्थ प्रबन्ध है; मसीही यूं ही किसी भी बात को जिसे कोई व्यक्तिगत रूप में मानता हो, स्वीकार नहीं कर सकते हैं। यहूदा 3 ''विश्वास, के लिए पूरा यत्न'' करने को कहता है जो ''विश्वास जो संतों को एक ही बार सौंपा गया था'' (KJV)। इसका अर्थ है कि मसीही डॉक्ट्रिन के लिए ''विश्वास'' इफिसियों 4:5 वाला ''एक विश्वास'' ही है।

ब्रूस ने लिखा, ''यह ताने, कोड़े मारे जाने, क्रूस पर दिए जाने और ठुकराए जाने के और भी कड़वे संताप, त्यागे जाने और बेपरवाही किए जाने के द्वारा [मसीह] द्वारा उठाए गए किसी भी दिखाई देने वाले या अदृश्य प्रमाण की सहायता के बिना केवल परमेश्वर में विश्वास था।''[15] उसने लज्जा की कुछ चिंता न करके क्रूस पर दुःख सहा जब लोगों ने परमेश्वर पर उसके भरोसे का मज़ाक उड़ाया (देखें मत्ती 27:43)।[16] उसका पूरा जीवन पिता में उसके भरोसे पर केन्द्रित था, उसने गतसमनी बाग में अपने आपको पूरी तरह से परमेश्वर के सपुर्द कर दिया (मरकुस 14:36)।

तब से क्रूस के विषय में आम विचार बदल गया है; हम शायद ही उस भद्दी लकड़ी पर कष्ट सहने और मरने वाले व्यक्ति से जुड़ी लज्जा और हर वर्ग के लोगों में इसे अपमान की कल्पना भी कर सकते हैं। यह करंट लगाने वाली विद्युत कुर्सी, कर्तन-यन्त्र (गिलोटिन), या ज़हर का इंजेक्शन देने से कहीं अधिक अपमानजनक था। यह सबसे बुरे अपराधियों के लिए होता था। ऐसे व्यक्ति को ''श्रापित'' माना जाता था (व्यवस्थाविवरण 21:22, 23; गलातियों 3:13 भी देखें)। मसीह को एक अपराधी की तरह मृत्युदण्ड दिया गया, जो कि वृक्ष पर मरने के ''श्राप'' में बढ़ोतरी ही होगी। गोली मार दिए जाने या फांसी दिए जाने वाले के सिर पर ओढ़नी रखने का पुराना रिवाज़ है, परन्तु यीशु का चेहरा पूरे संसार के सामने नंगा किया गया था। उस समय के साधारण आतंकवादी उन दो डाकुओं (मत्ती 27:38) या ''कुकर्मियों'' (लूका 23:32 [KJV; ASV], जिसका अर्थ ''बुराई करनेवाले,'' या ''बुरे लोग'' है) ने उसके विरुद्ध बातें कीं। जो उसने सहा वास्तव में उसके ''अपने विरुद्ध वैर'' (RSV) था; क्योंकि यीशु ने उस ''लज्जा

की परवाह'' न की जो भीड़ द्वारा उसे अपमानित किया गया था। उसे मालूम था कि वह पिता को प्रसन्न कर रहा है। अब उसे सबसे ऊंचा सम्मान दिया गया है क्योंकि वह सिंहासन पर परमेश्वर के दहिने बैठा है।

इब्रानियों की पुस्तक के मूल पाठकों को भी अपमान सहना पड़ रहा था और उन्हें सहते रहना आवश्यक था। उनके और हमारे, वास्तव में सारी मनुष्य जाति के लिए प्राणों को बचाने के लिए मसीह ने अत्यधिक कष्ट ''सहा'' और इस काम से उसे बड़ा आनन्द मिला।

आयत 3. इन मसीही लोगों को उस पर ध्यान देना था जिसने यह सब सहा और उनके जैसा बन गया ताकि वे निराश होकर साहस न छोड़ दें। ''ध्यान'' के लिए शब्द (*analogizomai* से)[17] का अर्थ मूलतया ''रूपक बनाना'' हो सकता है। यह जानने के लिए कि ठट्ठे और लज्जा का सामना करते हुए कैसे दृढ़ बने रहें, हम यीशु के कष्ट को अपने कष्ट के साथ मिला सकते हैं। ''लज्जा की चिंता'' और कष्ट के बावजूद मसीह ने उस बड़े आनन्द की ओर ध्यान रखा जिसे उसने क्रूस पर पाया था। हमें साथी मनुष्यों की ओर से मिलने वाली थोड़ी देर की लज्जा की चिंता करने के बजाय क्रूस के लाभों पर अपना ध्यान लगाना चाहिए।

आम तौर पर विश्वास को छोड़ने का पहला कदम इसे पाने के लिए निराश होना या हार मान लेना होता है।[18] बेचैनी भरी रात के बाद यीशु थका हुआ था! उसकी पेशियों (या कम से कम छह बार पूछताछ) के तनावों, उसकी पीठ पर चाबुकों, कांटों के मुकुट की निरन्तर पीड़ा को जो उनके लिए उसके तरस और अफ़सोस में मिली हुई थी जो यह समझते नहीं थे कि वे क्या कर रहे हैं, की कल्पना करें। इस सब ने उसे परेशान कर दिया होगा। फिर भी हमारी तरह उसे अपने सामने रखी आशा का आनन्द था। जब हम परम लाभ की आशा को खो देते हैं तो जल्द ही हम पीछा करना छोड़ देते हैं। हमें ''निशाने की ओर'' दौड़ना आवश्यक है ''ताकि वह ईनाम'' पाएं (फिलिप्पियों 3:14)।

मसीह का ईनाम अपने पिता की निकटता में वापस जाना, परमेश्वर के दाहिने हाथ बैठना था जो सबसे बड़े सम्मान का स्थान है। यहां यूनानी क्रिया का पूर्ण काल संकेत देता है कि कालांतर में किसी समय वह अपनी गद्दी पर बैठा और उस ईश्वरीय सिंहासन पर राजसी रूप में बैठा रहता है।[19] मसीह ने अज्ञानी पापियों के हाथों बड़ी पीड़ा और दबाव सहा जिन्होंने उसके मसीहा होने का इनकार किया। इसी प्रकार उसने स्वेच्छा से वह करना मान लिया जो उसे करना था क्योंकि वह जानता था कि उसे क्या मिलने वाला है।

इसलिए दौड़ हमारे सामने है। यह कठिन और परीक्षाओं से भरी है। वफ़ादारी से दौड़ने के लिए हमें रास्ते में आने वाले हर भार को उतारकर इसके लिए तैयारी करना आवश्यक है। हमें यीशु पर ध्यान लगाए रखना आवश्यक है और आवश्यक है कि कभी हार न मानें बल्कि अंत तक डटे रहें। जिस प्रकार से परमेश्वर ने हम से पहले जाने वालों को स्वीकार किया उसी प्रकार हम उसे फिनिश लाइन पर विजय का मुकुट लेकर हमारी राह देखते हुए पाएंगे।

परमेश्वर के बालकों के रूप में अनुशासन (12:4-11)

[4]तुमने पाप से लड़ते हुए उससे ऐसी मुठभेड़ नहीं की, कि तुम्हारा लहू बहा हो। [5]और तुम

उस उपदेश को जो तुम को पुत्रों की नाईं दिया जाता है, भूल गए हो,

''हे मेरे पुत्र, प्रभु की ताड़ना को हलकी बात न जान,
और जब वह तुझे घुड़के तो साहस न छोड़;
[6]क्योंकि प्रभु, जिससे प्रेम करता है, उसकी ताड़ना भी करता है;
और जिसे पुत्र बना लेता है, उसको कोड़े भी लगाता है।

[7]तुम दुःख को ताड़ना समझकर सह लो: परमेश्वर तुम्हें पुत्र जानकर तुम्हारे साथ बर्ताव करता है, वह कौन सा पुत्र है, जिसकी ताड़ना पिता नहीं करता? [8]यदि वह ताड़ना जिसके भागी सब होते हैं, तुम्हारी नहीं हुई, तो तुम पुत्र नहीं, पर व्यभिचार की सन्तान ठहरे! [9]फिर जब कि हमारे शारीरिक पिता भी हमारी ताड़ना किया करते थे, तो क्या आत्माओं के पिता के और भी अधीन न रहें जिससे जीवित रहें। [10]वे तो अपनी अपनी समझ के अनुसार थोड़े दिनों के लिए ताड़ना करते थे, पर यह तो हमारे लाभ के लिए करता है, कि हम भी उसकी पवित्रता के भागी हो जाएं। [11]वर्तमान में हर प्रकार की ताड़ना आनन्द की नहीं, पर शोक ही की बात दिखाई पड़ती है, तौभी जो उसको सहते सहते पक्के हो गए हैं, बाद में उन्हें चैन के साथ धर्म का प्रतिफल मिलता है।

लेखक ने इब्रानियों को दिखाने के लिए प्रमाण दिए कि ताड़ना उनके लिए परमेश्वर के प्रेम का संकेत था। पहले, उसने घोषणा की कि पवित्र शास्त्र इस सच्चाई की गवाही देता है। इसके बाद, उसने तय किया कि इस नियम का व्यक्तिगत अनुभव से पता चलता है, क्योंकि हम अपने बच्चे के प्रति एक पिता के प्रेम के कार्यों में इसे देखते हैं। अंत में, उसने अनुशासन के धन्य परिणामों का वर्णन किया।

आयत 4. आरम्भिक पाठक पाप से लड़ते हुए संघर्ष में लगे हुए थे, अभी तक [उनका] लहू वैसे नहीं बहा था जैसे यीशु का बहा था। उनके लिए संघर्ष में परम आशीष के रूप में परमेश्वर के अनुशासन को मानना सीखना शामिल था। इस आयत का अर्थ यह नहीं है कि कालांतर में किसी को भी शहीद नहीं होना पड़ा था। (याकूब प्रेरित को तलवार के साथ मौत के घाट उतार डाला गया था; प्रेरितों 12:2.) न इसका अर्थ यह है कि भविष्य में उनमें से किसी ने भी विश्वास के लिए मरना नहीं था। मसीही लोगों के इस समूह में पीठ लहू लुहान नहीं हुई थी (पौलुस की तरह) या पथराव नहीं हुआ था (यीशु के शारीरिक भाई धर्मी याकूब की तरह) ।[20] सताव से उनका बचाव कायरतापूर्ण कार्यों के द्वारा या यहूदीवाद के साथ समझौता करके हो सकता था। आज समझौता एक समस्या है क्योंकि कइयों में उनके साहस की कमी है जिन्हें अतीत में कष्ट भोगना पड़ा। वे मसीहियत के ''कोमल'' रूप को अपना कर, अर्थात दूसरों के हाथों में दुख सहने के लिए अति दयालु और सहनशील होकर सताव से बचने का प्रयास करते हैं!

आयतें 5, 6. पवित्र शास्त्र बताता है कि ताड़ना दी जाएगी (आयत 5)। क्या ये पाठक भूल गए थे कि पवित्र शास्त्र क्या कहता है? लेखक ने उन पर इसका आरोप लगाया, तो हमें मानना पड़ेगा कि वे भूल गए थे।

इन आयतों में उद्धरण नीतिवचन 3:11, 12 से लिया गया है और पहली सदी के इब्रानियों पर इस प्रकार लागू होती है जैसे सीधे उनसे बात की गई हो। हमें लग सकता है कि "नीतिवचन में जिस 'पुत्र' को चेताया गया है वह हम में से कोई नहीं हो सकता!" बाइबल हमेशा वर्तमान में होती है यानी यह हर युग में प्रासंगिक है। पुराने नियम के सत्य के नियम जब भी सम्भव हो हमारे लिए प्रासंगिक होने चाहिए। याद रखें कि हमारा परमेश्वर जिनसे प्रेम करता है उन्हें ताड़ना देकर "सिखाता" है।

हमने पहले इस प्रकार की प्रासंगिकता 3:7–11 में देखी थी जब सदियों पहले कही गई एक और ताड़ना इब्रानियों की पुस्तक के आरम्भिक पाठकों पर लागू की गई थी (देखें भजन संहिता 95:7–11)। दोहराया गया हवाला, "अनुशासन" (*paideia* से) के बारे में था जिसमें बालक को प्रशिक्षण और निर्देश देने की पूरी प्रक्रिया है।[21] साहित्यिक यूनानी में इस शब्द का संकेत "शिक्षा" था।[22] शब्द के अर्थ में "दण्ड" की आवश्यकता नहीं थी, परन्तु संदर्भ में किसी प्रकार का "कष्ट" का सुझाव है। आम यहूदी विचार में कष्ट को परमेश्वर की ओर से अनुशासन या सिखाने का ढंग माना जाता था।[23]

आयतें 7, 8. पुत्र होने के नाते जब हम दुःख सहते हैं (आयत 7) तो हम पुत्र का अनुसरण कर रहे होते हैं (5:8)। इसका परिणाम बहुत ही महिमामय है। इब्रानियों 2:10 यीशु के अपने "दुःख उठाने" के द्वारा "बहुत से पुत्रों को महिमा में" लाने से सम्बन्धित है। बिना कोई दुःख सहे किसी को भी अन्तिम महिमा में प्रवेश करने की उम्मीद नहीं करनी चाहिए, जैसा कि प्रेरितों 14:21, 22 में पौलुस और बरनबास ने कहा। वह हवाला किसी कथित "कलेश के समय" की नहीं बल्कि इस जीवन में आती रहने वाली परीक्षाओं की बात करता है।

ताड़ना अपनी **संतान** के लिए परमेश्वर के प्रेम का प्रतीक है। दुःख का न होना इस बात का संकेत हो सकता है कि हम शैतान की संतान हैं! हमारा स्वभाव ऐसा है कि हमें ताड़ना की आवश्यकता रहती है (जैसा आयत 10 में संकेत है)। यह हमारे लिए "बहुत ही महत्वपूर्ण और अनन्त महिमा उत्पन्न" करवा सकता है (2 कुरिन्थियों 4:17)। मुख्य बात यह है कि विश्वास के लिए किसी परेशानी को **सह** लेने पर हम हिम्मत न हारें।

हमें परमेश्वर की ताड़ना की इच्छा क्यों करनी चाहिए या हम इसे अपने लिए अच्छा क्यों मानें? लेखक ने तीन कारण दिए। (1) यह इस बात की पक्की निशानी है कि हम परमेश्वर की संतान हैं (आयत 8)। बिगड़े हुए बच्चे अप्रिय होते हैं। डोनल्ड गुथरी ने लिखा है, "*पुत्र* को अनुशासित करने की अनदेखी करने वाला *पिता,* पिता के रूप में अपनी क्षमता में दोषी है और अनुशासन से बचने वाला पुत्र अपने पुत्र होने के अधिकार को खो रहा है।"[24] (2) बाद में हम मुड़कर ओर देख सकते हैं कि अनुशासन या ताड़ना हमारे लिए अच्छी थी और उससे हमें सयाने व्यस्क बनने में सहायता मिली (आयतें 9, 10)। (3) इसके द्वारा हम "उसकी पवित्रता के भागी" हो सकते हैं (आयत 10)। यह पत्री केवल यहीं पर परमेश्वर के हमारा "पिता" होने का संकेत देती है (आयत 9)।

लेखक ने व्यभिचार की संतान को कोई विरासत या मीरास न दिए जाने की प्राचीन परम्परा को मान लिया। रोमी कानून में ऐसे बच्चे पिता के वश में नहीं होते थे और न ही वह उन्हें कोई निर्देश देता था।[25] जब परमेश्वर हमें अनुशासित करता है तो वह दिखा रहा होता है कि वह हमारा

पिता है और हम उसकी वैध संतान हैं, संसार चाहे हमें निकाले हुए माने।

आयतें 9, 10. पीड़ा के एक भाग में ताड़ना को शामिल किया जाना महत्वपूर्ण है। अपने बच्चों को अनुशासित करते हुए, एक अच्छा **पिता** उन पर दुःख के माप का इस्तेमाल कर सकता है। बेशक, हो सकता है कि उस समय उन्हें समझ न हो या ऐसे ढंग उन्हें नापसन्द हों। हमारा पिता भले ही हमारी भलाई के लिए, **हमारे लाभ के लिए** ही हमारी **ताड़ना करता है** चाहे उस समय यह अच्छा न लगे। इब्रानियों को जो ताड़ना मिल रही थी, एक प्रोत्साहन बल्कि आराम हो सकता है क्योंकि इसमें आश्वासन था कि वे सचमुच में परमेश्वर की संतान थे।

दुःख सहने के द्वारा ताड़ना का अच्छा उदाहरण प्रेरित पौलुस है। स्पष्टतया उसकी पीड़ा जो कि "शरीर में कांटा" था (2 कुरिन्थियों 12:7–10), बड़े दर्द, और शायद शर्मिंदगी का कारण था; परन्तु उसे इससे लाभ हुआ। उस कठिनाई से सुसमाचार और भी तेजी से चमका और उसकी चमक कम हो गई। एक आम आदमी ऐसे दुःख से अपमानित हो सकता था, परन्तु पौलुस नहीं हुआ। मसीह पौलुस के शरीर (फिलिप्पियों 1:20) में ऊंचा हुआ क्योंकि "धन मिट्टी के बर्तन" में था (देखें 2 कुरिन्थियों 4:7)। उसे समझ में आ गया कि खुद को नहीं बल्कि संदेश को आगे करके वह परमेश्वर का बेहतर सेवक था। उसने "[अपनी] निर्बलताओं पर (भी) घमण्ड" करना सीखा (2 कुरिन्थियों 12:9)! पौलुस, सी. एस. लुईस के साथ सहमत होता कि "परमेश्वर ... हमारे दर्द में चीखता है: बहरे संसार को सुनाने के लिए यह उसका मेगाफोन है।"[26] एल्बर्ट बार्नस ने कहा, "मैंने कभी कोई ऐसा मसीही नहीं देखा जिसे दुःख उठाने से लाभ न मिला हो।"[27]

यह मानने का कि परमेश्वर **आत्माओं के पिता** (आयत 9) अर्थ उसे सभी मसीही लोगों के "पिता" के रूप में पहचानना है। नये नियम में अक्सर उसे उसी शब्द से दिखाया गया है (मत्ती 6:9; लूका 11:2; यूहन्ना 20:17; रोमियों 8:15, 16; गलातियों 4:6)। "आत्माओं" स्वर्गदूतों के लिए नहीं हो सकता, क्योंकि इब्रानियों की पुस्तक में उन्हें परमेश्वर के "बेटे" (1:5; 2:5, 16) नहीं माना गया।

परमेश्वर हमारी आत्माओं का सृजनहार है जिन्हें उसने संसार में हमारे जन्म के समय हमें दिया था। मृत्यु के समय व्यक्ति की आत्मा "परमेश्वर के पास जिसने उसे दिया लौट" जाएगी (सभोपदेशक 12:7)। सभोपदेशक के समझदार लेखक को मालूम था कि हमारा "आत्माओं का पिता" है, जो ऐसी अभिव्यक्ति है जिसका इस्तेमाल नये नियम में केवल यहीं हुआ है (आयत 9)। "आत्माओं के पिता" में विश्वास व्यक्ति को **जीवित** रखता है। यह अनन्त जीवन और भी इस वर्तमान अस्तित्व के लिए भी (हबक्कूक 2:4; इब्रानियों 10:38) होना चाहिए।

एक यूनानी युवक के लिए थोड़े दिनों (आयत 10) व्यस्कता तक पहुंचने के बाद तीसरे वर्ष तक, विवाह तक, या सरकारी रजिस्टर में नाम लिखे जाने तक पिता के अनुशासनात्मक नियंत्रण में रहना होता था।[28] अनुशासन में रहने के मसीही व्यक्ति के "थोड़े दिन" का दुःख कुछ सालों तक रह सकता है, परन्तु अनंतकाल (2 कुरिन्थियों 4:16, 17) के सामने इसे "थोड़ा" ही माना जा सकता है।

आयत 11. ताड़ना शब्द उसी से लिया गया है जिससे रोमियों 2:20 वाला "उपदेशक" (*paideutēs*) शब्द अनुवाद हुआ है। ऐसा व्यक्ति "सिखानेवाला" या "गुरु" कहलाता

था, जो अनुशासन और शिक्षा देता था, विशेषकर बच्चों को। इस शब्द का सम्बन्ध *paideion* (''छोटे बच्चों'') से है और ''बच्चों को सुधारने वाला,'' ''अनुशासित करने वाला,'' या यहां तक कि ''पुत्र को सिखाने वाला'' भी हो सकता है।[29] अच्छी तरह से सिखाया गया बच्चा अपने माता पिता का उनके उसे अनुशासित करने के लिए ''आदर करता'' था (आयत 9)।

प्रेम में अनुशासनात्मक दण्ड ''बदला लेने के लिए नहीं हो सकता, बल्कि लाभदायक ही होना चाहिए।''[30] जवानी में बेकार लगने वाली बात बुढ़ापे में अक्सर अच्छी लगती है। क्या यह अजीब बात नहीं है कि हम सयाने होने पर अपने सांसारिक पिताओं से प्रेम करने लगते हैं जबकि एक समय था जब हमें लगता था कि वे हमारे साथ बहुत ही कठोर और बर्बर थे? मेरे पिता ने मुझे ताड़ना देकर चाहे गलती की हो, परन्तु मुझे मालूम होता था कि वह मुझे प्रेम करते हैं। एक बालक के रूप में मेरे लिए कठोर लगने के बावजूद मैं उनका आदर करता हूं।

माता-पिता को समझ आता है कि सच्चा प्रेम कठोर होना और कभी-कभी कठोर अनुशासन आवश्यक होता है। कई बार जल्दबाजी में गुस्सा या शक्ति के प्रेम के कारण भी माता-पिता को क्रोध आ सकता है। परन्तु आम तौर पर, माता-पिता बच्चों के मन में कुछ हद तक डर से प्रेम के कारण ही काम करते हैं। यदि हम अपने सांसारिक पिताओं से जो हमें दण्ड देते हैं, प्रेम कर सकते हैं, तो अपने स्वर्गीय पिता से जिसने हमें आत्माएं दी हैं, प्रेम क्यों नहीं कर सकते हैं? यह तथ्य कि वे ''अपनी-अपनी समझ के अनुसार'' (आयत 10) करते थे इस बात पर जोर हो सकता है कि माता-पिता के निर्णय गलत भी हो सकते हैं।

बच्चों का पालन-पोषण करने में बच्चे के विश्वास का निर्माण भी होना चाहिए। अच्छे माता-पिता क्रूर या निर्दयी नहीं होते, बल्कि वे न्याय की सही अवधारणा को अमल में लाते हुए जो उन्हें उचित और आवश्यक लगता है, वही करते हैं। परमेश्वर ''हमारे लाभ के लिए हमारी ताड़ना करता है'' का अर्थ *पूरी भलाई* है न कि अपनी मौज से। ऐसा वह इसलिए करता है ताकि हम उसकी इच्छा के आगे झुककर उसके अनुसार काम करें, जिससे अब और अनंतकाल तक उसकी पवित्रता में भागीदार बन जाएं। वह हमें अपने जैसे बनाना चाहता है, वैसे ही जैसे अच्छे सांसारिक माता-पिता चाहते हैं कि उनके बच्चे उसकी तरह बनें। इसमें उससे प्रेम करना जिससे परमेश्वर प्रेम करता है और उसके स्वरूप में बढ़ना भी शामिल है।

ताड़ना का अनुवाद *gumnazō* शब्द से किया गया है, जो ''gymnasium'' के साथ आसानी से मेल खाने वाला शब्द है। इस शब्द में ''यूनानी व्यायामशाला की कल्पना है, जहां युवाओं को खेलकूद की प्रतियोगिता के लिए प्रशिक्षित किया जाता था। ईनाम की चाहत एक कठिन संघर्ष था जिसके लिए कठोर प्रशिक्षण आवश्यक था।''[31] जिस प्रकार व्यायाम से शारीरिक मांसपेशियां मजबूत होती हैं, वैसे ही जीवन की परीक्षाएं आत्मा को मजबूत बनाती हैं। इसका अर्थ यह हुआ कि मसीही व्यक्ति को प्रभावी अनुशासन के लाभों की इच्छा करना और उन्हें संघर्ष के लायक होने के रूप में मानना चाहिए।

उचित प्रशिक्षण और ताड़ना का परिणाम चैन के साथ धर्म का प्रतिफल और ''उसकी पवित्रता'' (आयत 10) में सहभागिता होना होता है। इस प्रतिफल को पाने के लिए सदाचार, ईमानदारी और उद्देश्य भरा जीवन जीना आवश्यक है। मसीही व्यक्ति का उद्देश्य परमेश्वर की महिमा के लिए सेवा करना है। हमें शुद्ध किए जाने के द्वारा पवित्र किया जाता है (10:22 देखें)।

परमेश्वर के साथ पूरी पवित्रता हमें चाहे स्वर्ग में ही मिलेगी, परन्तु अब भी वह हमें उसके उद्धार करने वाले अनुग्रह और प्रायश्चित की यीशु की मृत्यु (10:19) के द्वारा मिलती है।

रोमियों 5:1 में पौलुस द्वारा भी ''चैन'' और ''धर्म'' को भी जोड़ गया है जहां विश्वास से धर्मी ठहरने के बाद चैन मिलता है। ''चैन के साथ धर्म का फल'' कितना अद्‌भुत होता है जब इसे दु:ख सहकर पाए गए प्रशिक्षण से प्राप्त किया जाता है! इस फल को, कोमल भावना रखकर और यह याद रखकर कि प्रभु का आना निकट है, और चिन्ता पर काबू पाने के लिए प्रार्थना करके बरकरार रखा जाता है (फिलिप्पियों 4:4-7)।

परमेश्वर के अनुग्रह की तलाश और विश्वासी जीवन जीने के लिए प्रोत्साहन (12:12- 17)

[12]इसलिए ढीले हाथों और निर्बल घुटनों को सीधे करो। [13]और अपने पांवों के लिए सीधे मार्ग बनाओ, कि लंगड़ा भटक न जाए, पर भला चंगा हो जाए।

[14]सबसे मेल मिलाप रखो, और उस पवित्रता के खोजी हो जिसके बिना कोई प्रभु को कदापि न देखेगा। [15]और ध्यान से देखते रहो, ऐसा न हो, कि कोई परमेश्वर के अनुग्रह से वंचित रह जाए, या कोई कड़वी जड़ फूटकर कष्ट दे, और उसके द्वारा बहुत से लोग अशुद्ध हो जाएं। [16]ऐसा न हो, कि कोई जन व्यभिचारी, या एसाव के समान अधर्मी हो, जिस ने एक बार के भोजन के बदले अपने पहिलौठे होने का पद बेच डाला। [17]तुम जानते हो, कि बाद में जब उसने आशीष पानी चाही, तो अयोग्य गिना गया, और आंसू बहा बहाकर खोजने पर भी मन फिराव का अवसर उसे न मिला।

लेखक ने अपने विश्वासी पाठकों को दृढ़ बने रहने की ताड़ना देने के लिए कई प्रोत्साहन दिए। विश्वास में बढ़ने और बने रहने को सुनिश्चित करने के लिए और किसी को गिरने से रोकने के लिए, कुछ व्यवहारों और गुणों को बढ़ाना आवश्यक है।

आयतें 12, 13. हमारा फ़र्ज़ है कि सफर में कोई भी पीछे न छूटे ताकि वह गिर जाए और कलीसिया उसे खो दे। जो निर्बल हैं (आयत 12) उनका ध्यान किया जाना आवश्यक है।

पहला उपदेश यशायाह 35:3 जैसा ही है। दूसरा नीतिवचन 4:26, 27 से लिया गया गया है।[32] LXX में कहा गया है, ''अपने पांवों के लिए मार्ग सीधे करो, और अपने मार्गों को दरूस्त करो। न तो दाहिने मुड़ो और न बायें, बल्कि अपने पांव को बुरे मार्ग से दूर करो। ...'' यशायाह 35 में मसीहा का संदर्भ है जिसका स्पष्ट संकेत आयतें 5 और 6 में है, जो उन कुछ आश्चर्यकर्मों का विवरण है जो मसीहा ने करने थे। (स्पष्टतया मत्ती 11:5 यशायाह के इस हवाले का संकेत देता है।)

इसमें शरीर की बात है या आत्मा की, ''ढीले हाथ और कमज़ोर घुटने उदासी और निराशा का स्पष्ट रूपक'' बन जाता है।[33] पुराने नियम के हवालों में उन बंदियों को दर्शाया गया जिन्होंने

बाबुल से लौटना था और उन्हें रास्ते में सहायता की आवश्यकता होनी थी। **लंगड़ा भटक न जाए** (आयत 13) का अर्थ है कि जिनके अंग ठीक नहीं होने थे उन्हें चलने के लिए कुछ सहायता की आवश्यकता होनी थी। इब्रानियों की पुस्तक में, यह स्वर्गीय यरूशलेम को जा रहे मसीही लोगों के लिए है। बलवानों को सफर में निर्बलों की सहायता करना आवश्यक है। इससे आत्मिक रूप में लंगड़ा हो गए लोगों के चंगा हो जाने की उम्मीद थी। इसके लिए पूरी मण्डली के प्रोत्साहन की आवश्यकता हो सकती है।

रोमियों 15:1 में यही विचार मिलता है जहां पौलुस ने घोषणा की, ''निदान हम बलवानों को चाहिए कि निर्बलों की निर्बलताओं को सहें; न कि अपने आप को प्रसन्न करें।'' ''बलवानों'' शब्द बहुवचन अवश्यमाननीय है और ''इसका तात्पर्य कइयों का संयुक्त प्रयास'' है।[34] बलवानों को इसे नियमित रूप से पढ़ना आवश्यक है, और थके हुओं और निराश लोगों को यह जानने के लिए कि दूसरों द्वारा उनकी सहायता कैसे हो सकती है, इसे पढ़ना चाहिए। हर मसीही को दूसरों को प्रतिज्ञा किए हुए देश में उनके सफ़र में उन्हें प्रोत्साहित करना चाहिए। हम पथ से हट या ठोकर खिलाने वाले पत्थरों की तरह बाधाओं को नहीं छोड़ सकते।

सीधे मार्ग रास्तों के टेढ़े-मेढ़े और आम तौर पर पथरीले होने का सुझाव देता है जिन पर चलने के लिए काफ़ी प्रयास की आवश्यकता थी। लंगड़े व्यक्ति के लिए सीधे, साफ़-सुथरे मार्ग का होना कितनी बड़ी आशीष होना था! विश्वास से बहक जाना आसान लग सकता तो है, परन्तु होता इसके उलट ही है। समय और प्रयास से केवल परमेश्वर का मार्ग ही आसान होता है (मत्ती 11:28-30)। यह ''सीधा ... और तंग'' मार्ग है, जिसे मत्ती 7:13, 14 (KJV) में ''सकेत'' बताया गया है।

पर भला चंगा हो जाए आत्मिक चंगाई या विश्वास की बहाली का संकेत देता है। ''चंगा'' होने की अवधारणा इस प्रकार से यशायाह 6:10 और मत्ती 13:15 में बताई गई है जहां यह उस चंगाई के लिए इस्तेमाल हुई है जो यीशु के संदेश को सुनने से मिलती है (यूहन्ना 12:40; प्रेरितों 28:28 भी दखें)।

आयत 14. मसीही व्यक्ति के लिए सबसे मेल मिलाप रखने और पवित्रता के उच्च स्तर को पाते हुए, परमेश्वर के हर बालक को उसके अनुग्रह में रखने के बड़ी सकारात्मक बातें हैं। सच्चे मन से इनकी इच्छा करना और इन्हें अपना प्राथमिक उद्देश्य बना लेना आवश्यक है।

खोजी शब्द (*diōkō* से) एक मजबूत शब्द है और किसी लक्ष्य के लिए काम करने की उत्सुकता को दिखाता है।[35] यह हाल ही में होने वाले सताव और उसकी प्रतिक्रिया केसम्बन्ध में कलीसिया में उठने वाले प्रश्न का उत्तर हो सकता है।

मसीही लोगों को मेल, दया, और पवित्रता तीनों के लिए प्रयास करने आवश्यक हैं। राहाब ने इस्राएली भेदियों (11:31) की रक्षा करके इसी नीति का पालन किया। उसने परमेश्वर के लोगों के साथ मेल चाहा और, नतीजा यह हुआ कि वह स्वयं उन्हीं में मिल गई। राहाब के यहूदी धर्म में आने की तरह हमें, लोगों को विश्वासी बनाकर, उन्हें मसीह के पास लाने का प्रयास करना आवश्यक है।

पवित्र शास्त्र में ''मेल'' या शांति (*shalom*) के लिए पुराने नियम का शब्द आम तौर पर हर प्रकार से भलाई को दिखाने के लिए प्रयोग में लाया जाता है। इस वचन में ''मेल''

(*eirēnē*) के लिए बुलाहट पवित्रता के लिए बुलाहट की तरह ही है। मेल के खोजी होने के विचार (देखें रोमियों 14:19 और 1 पतरस 3:11) पर पूरे नये नियम में बल दिया गया है। मेल करने और पवित्रता का विचार आमतौर पर इकट्ठे मिल जाते हैं (मत्ती 5:8, 9)। हर मसीही को इन सभी गुणों को बढ़ाना आवश्यक है।

हमें लगन से और पवित्र बनने की तलाश करना चाहिए। शब्द ''पवित्रता'' (*hagiasmos*) का अर्थ है ''अलग किया गया'' और इसमें शुद्ध किया जाने और अलग होने के विचार भी हैं। जब तक हम पवित्रता में बढ़ते नहीं हैं तब तक हम परमेश्वर के जैसे नहीं हो सकते। पौलुस के पत्रों में *hagiasmos* शब्द का इस्तेमाल उन लोगों की जो मसीह में हैं स्थिति (1 कुरिन्थियों 6:11) के सम्बन्ध में किया गया है, मसीह के साथ हमारे सम्बन्ध के कारण हमारा यही स्वभाव होना चाहिए; इसके बिना, हम प्रभु को नहीं देख सकेंगे। यहां तक कि कलीसिया में भी बहुत से लोग, बुराई से न हटने और पवित्रता की तलाश न कर पाने के कारण प्रभु को नहीं देख पाएंगे। जैसा कि आयतें 16 और 17 में देखा गया, एसाव गलत नमूना है; समस्या का सही समाधान 1 थिस्सलुनीकियों 4:1-8 में मिलता है जहां पौलुस व्यभिचार के पाप के बारे में बिल्कुल स्पष्ट था।

''सीधे मार्ग'' पर चलने का भाग भाइयों के बीच ''मेल'' का तरीका ढूंढ़ने की कोशिश करना है। यह आवश्यक है कि विरोधी गुटों को अनन्त उद्धार के मार्ग में कलीसिया को विभाजित करने नहीं देना चाहिए। यह एक निरंतर खतरा है, और यदि हम परमेश्वर के ढंग को नहीं मानते हैं तो वह ऐसा होने देता है। भाइयों को साथ चलते हुए आपसी मतभेदों को भुलाना सीखना आवश्यक है। 1 कुरिन्थियों 6:1-8 में पौलुस इसी नियम को बताया है। ''हमें *पाप* से लड़ना है न कि *मनुष्यों* से। ...''[36]

परन्तु सच्चाई से समझौते की कीमत पर मेल करने की अनुमति नहीं है। यीशु ने बताया कि यदि किसी की शिक्षा गलत है तो उसकी आराधना व्यर्थ है। झूठी शिक्षा देने वाले जब दूसरों को वही करने को विवश करते हैं, जो वे स्वयं करते और कहते हैं, तो वे सब गड्ढे में गिरेंगे (मत्ती 15:8-14)। अंत में, सच्ची और सदा रहने वाली शांति, यानी मेल और सुलह परमेश्वर की ओर से मिलती है क्योंकि वह ''शांतिदाता परमेश्वर'' है (देखें इब्रानियों 13:20)।

लड़वाने वाला व्यक्ति प्रभु को कदापि न देखेगा। यह प्रतिज्ञा झगड़े को और भी अधिक भयानक विचार बना देती है। ''प्रभु को न देखने'' का अर्थ है कि उन्हें ''प्रभु के सामने से और उसकी शक्ति के तेज से दूर'' नरक में फैंक दिया जाएगा (2 थिस्सलुनीकियों 1:9)। यह स्पष्ट रूप से धर्म त्याग के विरुद्ध एक स्पष्ट चेतावनी है।

सब लोग न्याय में परमेश्वर के सामने खड़े होंगे, परन्तु उसे ''देखने'' का अर्थ उसके साथ एक होना और उसकी उपस्थिति का आनंद लेना है। बिना पवित्र किए यानी अपने पापों में रहते हुए किसी को भी न तो कभी स्वर्ग भेजा गया है और न भेजा ही जाएगा (यूहन्ना 8:21-24; प्रकाशितवाक्य 21:27)।

आयत 15. देखते रहो (*episkopountes*) संज्ञा शब्द *episkopeō* से लिया गया वर्तमान कृदंत है। 1 पतरस 5:2 में इस शब्द को इस्तेमाल ऐल्डरों के काम के लिए किया गया है। यह एक निगरान या संरक्षक के काम को दर्शाता है। कइयों को मसीह से दूर बहने से रोकने की कार्रवाई सुझाव देती है कि ''पूरा समुदाय चौकर रहे।''[37] ''देखते रहो'' कि कोई वंचित

न रह जाए संसार के लोगों के लिए नहीं हो सकता, क्योंकि मसीह से बाहर रहने वाले लोग निश्चित रूप में वंचित रहते हैं। इसलिए, यह एक और चेतावनी है कि विश्वासी मसीही कई बार ''वंचित'' हो जाते हैं। हर मसीही के लिए अपनी स्वयं की आत्मा को ''देखना'' या ''ध्यान रखना'' और रखने में दूसरों की ''निगरानी'' सहायता करना आवश्यक है।

यहां इस्तेमाल की गई आकृति दूसरों से पीछे रह जाने वाले यात्री की है। आत्मिक रूप में जब ऐसा होता है, ऐसा व्यक्ति परमेश्वर के अनुग्रह से ''वंचित'' रह जाता है। कारवां के पीछे रह जाने वाले व्यक्ति के लुटेरों, कमज़ोरी या बीमारी में फंस जाने का खतरा रहता था। ऐसा होने पर, वह अपने गंतव्य तक नहीं पहुंच सकता था या घर नहीं लौट सकता था। इसी प्रकार, आत्मिक मार्ग पर शैतान सुस्त व्यक्ति को काबू कर सकता है। मोज़ज़ स्टुअर्ट ने इस वचन की व्याख्या इस प्रकार दी है: ''ध्यान रखें, कि कोई भी उस ईश्वरीय समर्थन को पाने से रह न जाए जो पवित्रता के कारण मिलता है।''[38] हर सावधानी और सहायता के बावजूद, कुछ लोग परमेश्वर के अनुग्रह से वंचित रह जाते हैं। जब ऐसा होता है, ''तो यह इसलिए नहीं है कि उसके अनुग्रह तक पहुंच नहीं हुई, बल्कि इसलिए कि उन्होंने स्वयं इसे नहीं पाया, और इस कारण लक्ष्य तक नहीं पहुंच पाए जिसे केवल उसके अनुग्रह से पाया जा सकता है। ...''[39]

कड़वी जड़ कुछ सकल पाप को दिखाता हो सकता है। शमौन की ''पित्त की सी कड़वाहट'' उसके अपने लालच (प्रेरितों 8:23) के कारण हुई थी। व्यवस्थाविवरण 29:18 में मूर्तिपूजक विश्वासत्याग को ''कोई जड़, जिससे विष या कड़वा बीज उगा हो'' बताया गया है। पुरुष और स्त्रियां अन्य देवी-देवताओं के पीछे जाकर अपने मन प्रभु से फेर रहे थे। इब्रानियों 3:12 में इसी अवधारणा को ''बुरा और अविश्वासी मन'' कहा गया है। इसमें मन की कोई भी बात हो सकती है जिससे मन और आत्मा भ्रष्ट हुई हो। इसका असर भयावह है:

> ... उनके बीच में कड़वाहट और विद्रोह से भरा एक व्यक्ति पूरे समाज पर विनाशकारी प्रभाव डाल सकता है, जो उस हानिकारक जड़ की तरह जो पूरी फसल को ज़हरीला कर सकती है, *बहुतों को दूषित* कर सकती है जो, मूसा के शब्दों में, ''प्यासे और तृप्त दोनों को मिटाने'' का काम कर सकता है (व्यवस्थाविवरण 29:19)।[40]

हमें कलीसिया के लोगों को अशुद्ध होने से रोकने के लिए प्रयास करना चाहिए। समस्या यह है कि ''एक जड़'' कइयों को अशुद्ध कर सकती है। गलत शिक्षा देने वाला एक व्यक्ति, केवल कुछ बातें कहकर लोगों को ''अशुद्ध'' करके उनके मन में संदेह उत्पन्न कर सकता है।

आयत 16. यह विचार आयत 15 में दी गई (और 13:4 में दोहराई गई) चेतावनी को बढ़ाता है। मसीही लोगों के लिए आवश्यक है कि पीछे रहकर परमेश्वर के अनुग्रह से वंचित न हो जाएं। अपने जीवन में पवित्रता को बढ़ाने और बनाए रखने के साथ ऐसा नहीं होगा।

पवित्रता की तलाश करने में विफल रहने वाले व्यक्ति के लिए एसाव प्रमुख उदाहरण है। पुराने नियम में उसे व्यभिचारी (*pornos*) नहीं बताया गया है, परन्तु पवित्र वस्तुओं के प्रति अपने व्यवहार में वह अधर्मी था, जैसा कि उसके अपना पहलौठा होने का अधिकार बेच देने से स्पष्ट है। NKJV में उसे ''व्यभिचारी या अपवित्र व्यक्ति'' कहा गया है। यूनानी शब्द

''व्यभिचारी'' से व्यापक है और ''अधर्मी'' (*bebēlos*) या ''अपवित्र'' होने जैसा ही है। सच्चे धर्म की उपेक्षा करने वाला व्यक्ति अक्सर अपनी ही अभिलाषाओं को पूरा करने वाला हो जाता है क्योंकि आत्मिक बातों की उसके लिए कोई कद्र नहीं होती। व्यभिचारियों और अधर्मियों दोनों का हाल एक सा होगा यदि वे दोनों मन नहीं फिराते हैं। परमेश्वर के राज्य में उन्हें सहन नहीं किया जाएगा (1 कुरिन्थियों 5:9–11)। व्यभिचार पर स्टैंड लेने में नाकाम रहने के कारण कलीसिया परमेश्वर से संसार की ओर खिसक रही है; मसीही लोगों को अपनी निष्ठा को बाइबल के मानकों अनुसार नए बनाते रहना आवश्यक है।

आयत 17. एसाव के व्यभिचारी चरित्र को स्पष्ट रूप से उसके विदेशी पत्नियों से शादी करने और उसकी बुराई, बुतपरस्ती के प्रभाव की अनदेखी के द्वारा दिखाया गया (उत्पत्ति 36:2, 3; 26:34, 35)। उसका व्यवहार ''अधर्मी'' या ''अपवित्र'' था जब उसने अपने पहलौठा होने के अधिकार से अपनी भूख को अधिक महत्व दिया। उसने पवित्र को कम जाना। परमेश्वर ने उसे अपना पहलौठा होने के अधिकार को छोड़ने का दबाव नहीं डाला; उसने इसे बिल्कुल अपनी मर्ज़ी से छोड़ा। उसे आशीष नहीं मिल सकी, क्योंकि उसने ''अधर्मी'' होने को चुना। उसने थोड़ी देर के लाभ के लिए सदा से भोजन के लिए अपने पहलौठा होने के अधिकार को बेच दिया।

आशीष का अर्थ आराधना में परिवार की अगुआई करने के विशेषाधिकार के साथ परिवार में प्रमुख स्थान ही नहीं बल्कि विरासत और अब्राहम को दी गई प्रतिज्ञाओं का दोगुना भाग मिलना भी था।[41] याकूब के लिए आत्मिक अगुआई का बहुत महत्व है, परन्तु एसाव के लिए इसका इतना महत्व नहीं था। एसाव के लिए यदि उस आशीष का महत्व होता तो याकूब उससे इसे इतनी आसानी से नहीं ले सकता था।[42] दूसरी ओर, लगता है कि याकूब ने उस ईश्वरीय आशीष के लिए धन्यवाद करता रहा। जीवन के अंत के पास, बल्कि उसके सबसे खराब समय (11:20, 21) में खास तौर पर इसका पता चलता है।

इसहाक ने एसाव के कड़वे आंसू को परमेश्वर की स्पष्ट इच्छा को बदलने नहीं दिया क्योंकि पहलौठा होने का अधिकार सर्वशक्तिमान के आत्मिक मार्गदर्शन में दिया गया था (उत्पत्ति 27:34)। इसहाक ने देखा कि उसके साथ धोखा हुआ है; परन्तु, परमेश्वर की इच्छा को जानने के कारण, अपने बड़े पुत्र के मिन्नतें करने के बावजूद उसने मन बदलने की हिम्मत नहीं की।

मन फिराव के लिए (*metanoia*) शब्द का इस्तेमाल किया गया है। आशीष के विषय में पिता अपना मन बदल नहीं सकता था। एसाव ने इतना घोर पाप किया था कि उसके मन फिराने के बावजूद परमेश्वर ने उसे आशीष को फिर से पाने नहीं देना था। ऐसे व्यक्ति के सम्बन्ध में पिता का प्रेम ईश्वरीय इच्छा के विरुद्ध नहीं जा सका, जिस कारण एसाव को अपनी मूर्खता का परिणाम भुगतने के लिए छोड़ दिया गया। उसका जीवन उन लोगों के लिए एक बड़ा सबक है जिन्हें लगता है कि बाद में वे अपने पापों को सुधार सकते हैं; ऐसा करना पूरी तरह से सम्भव नहीं है।

विश्वासी व्यक्ति का विश्वासत्याग एसाव के निर्णय जैसा है। कोई थोड़ी देर के लिए सताव की पीड़ा से बच सकता है, परन्तु वह थोड़ी देर के लाभ वाली कम महत्व वाली चीज़ के लिए कहीं बेशकीमती चीज़ को छोड़ रहा होगा। विश्वासत्याग सम्भव है, और हमारे परमेश्वर के लिए यह बहुत ही गम्भीर बात है।

एसाव का मामला वायदा की गई आशीष से वंचित होने का एक और उदाहरण है (4:1 वाले ''विश्राम'' की तरह)। विश्वासत्याग के परिणाम स्थायी हैं और यहां तक ले जा सकते हैं कि विश्वास में लौट जाने की इच्छा होने के बावजूद व्यक्ति वापस न आ सकता। एसाव जैसी सोच वाले व्यक्ति के लिए, सचमुच में मनफिराव करना असम्भव हो सकता है। पूरी तरह से विश्वासत्याग उसके लिए परमेश्वर के अनुग्रह को पाने का अवसर खो देता है। उसकी अनिच्छा और अंत में उसके हृदय परिवर्तन न हो पाने के कारण, परमेश्वर गलती करने वाले भाई के प्रति अपनी इच्छा को नहीं बदलेगा (देखें 6:4-6; 10:26-29)।

सीनै की महिमा और सिय्योन/''स्वर्गीय यरुशलेम'' की बड़ी महिमा में अंतर (12:18-24)

[18]तुम तो उस पहाड़ के पास जो छुआ जा सकता था और आग से प्रज्वलित था, और काली घटा, और अन्धेरा, और आन्धी के पास। [19]और तुरही की ध्वनि, और बोलनेवाले के ऐसे शब्द के पास नहीं आए, जिस के सुननेवालों ने विनती की, कि अब हम से और बातें न की जाएं। [20]क्योंकि वे उस आज्ञा को न सह सके, कि यदि कोई पशु भी पहाड़ को छूए, तो उस पर पत्थरवाह किया जाए। [21]और वह दर्शन ऐसा डरावना था कि मूसा ने कहा; मैं बहुत डरता और कांपता हूं। [22]पर तुम सिय्योन के पहाड़ के पास, और जीवते परमेश्वर के नगर स्वर्गीय यरूशलेम के पास। [23]और लाखों स्वर्गदूतों और उन पहिलौठों की साधारण सभा और कलीसिया जिसके नाम स्वर्ग में लिखे हुए हैं; और सब के न्यायी परमेश्वर के पास, और सिद्ध किए हुए धर्मियों की आत्माओं। [24]और नई वाचा के मध्यस्थ यीशु, और छिड़काव के उस लहू के पास आए हो, जो हाबिल के लहू से उत्तम बातें कहता है।

12:18-29 में यह खण्ड एक और चेतावनी का भाग है। पहली चेतावनी के विरुद्ध (2:1-4), दूसरी चेतावनी अविश्वास के विरुद्ध (3:7-4:13), तीसरी चेतावनी विश्वास से फिरने के विरुद्ध (5:11-6:20) और चौथी चेतावनी जान बूझकर किए जाने वाले पाप के विरुद्ध थी (10:26-31)। 12:18-29 में पांचवीं चेतावनी को इस प्रकार संक्षिप्त किया जा सकता है, ''सावधान रहो, और उस कहने वाले से मुंह न फेरो'' (12:25)। परमेश्वर की आज्ञा का पालन न करने से अनन्त विनाश होता है। यह ताड़नाएं मसीह के प्रति वफ़ादारी को सुरक्षित रखने और पाठकों को उससे दूर जाने से रोकने के लिए बनाई गई हैं।

आयतें 18, 19. हमें मिली आशिषें उन लोगों को जिन्हें सीनै पहाड़ पर परमेश्वर के साथ शारीरिक अनुभव हुआ था से कहीं बड़ी हैं। वे किसी वास्तविक चीज़ के पास आए थे जिसे छुआ जा सकता था परन्तु इसे छूने की मनाही थी। जिस पहाड़ के पास वे आए थे वह आग से जल उठा था और इसके आस-पास अंधेरा था (निर्गमन 19:16-19)। जिन घटनाओं को उन्होंने देखा था उनके मन में जीवित परमेश्वर के लिए भय उत्पन्न हुआ, जो बिल्कुल वैसा ही होगा जैसा वे चाहते थे। आग, काली घटा और तुरही की आवाज ने इस बात पर जोर दिया होगा कि परमेश्वर उस समय कितना अगम्य था। नई वाचा की सभी आशिषें मिलने पर यह

आश्चर्यजनक लगता है कि कोई पुरानी वाचा में वापस जाना चाहेगा। इसके विपरीत हम एक आत्मिक पहाड़ के पास आए हैं। शारीरिक रूप में इसे छुआ नहीं जा सकता, क्योंकि यह आत्मिक पहाड़ सिय्योन है (12:22), जिससे अद्‌भुत लाभ मिलते हैं।

आयत 18 में के पास आने की अभिव्यक्ति का इस्तेमाल मनुष्य के परमेश्वर के पास या निकट आने के लिए किया गया है (देखें 4:16; 10:1; 11:6)। यह पुराने नियम के सुझाव से बिल्कुल उलट है कि आराधक परमेश्वर के सामने आते थे। किसी ने तर्क दिया हो सकता है कि यहूदीवाद का ढंग अच्छा था क्योंकि मन्दिर में परमेश्वर के सामने आना बहुत बड़ा सौभाग्य था, परन्तु इब्रानियों के लेखक ने दिखाया कि परमेश्वर *के पास* आना और भी अद्‌भुत है।

परमेश्वर की वास्तविक महिमा एक दिन उन सब पर प्रकट की जाएगी जो नई वाचा के अवसरों का इनकार करते हैं। पुरानी वाचा में तुरही की आवाज से कान बहरे हो जाते होंगे; यह लोगों को भयभीत कर देती थीं ताकि वे सब के सब कांप उठें। विचार करें कि परमेश्वर की तुरही की ध्वनि से अन्त में (देखें 1 थिस्सलुनीकियों 4:16) दुष्ट लोग कैसे दहल जाएंगे! हमें परमेश्वर की महिमा के केवल भौतिक प्रदर्शन नहीं मिलते हैं। हम वास्तव में अपने परमेश्वर और पिता के पास आ सकते हैं (12:23)।

आयतें 20, 21. पुरानी वाचा का प्रकाशन मुख्यतया भौतिक वस्तुओं से सम्बन्धित था (इब्रानियों 9:11, 24), परन्तु नई वाचा में स्वर्गीय यरूशलेम जैसी ऊंची और अधिक पवित्र बातों पर ध्यान लगाया गया है, जिन्हें आत्मिक रूप से ही छुआ जा सकता है। यह परमेश्वर की उपस्थिति का सांकेतिक शब्द है, जिसके निकट हम दिलेरी से आ सकते हैं (इब्रानियों 4:16; 9:24)। इब्रानियों की पुस्तक "यहां और कहीं और (9:11, 24; तुलना 8:5), यूनानी परम्परा के अनुसार है कि जो भौतिक है वह उससे घटिया है जो अभौतिक है।'[43] लेखक छोटे तर्क से आरम्भ करके बड़े तक ले गया: यदि भौतिक पहाड़ के लिए आदर दिखाया गया और मूसा डर गया था, तो हमें उस स्वर्गीय का कितना अधिक आदर करना चाहिए!

मूल निर्देश यदि कोई पशु भी पहाड़ को छू ले तो उस पर पथराव किया जाए निर्गमन 19:12, 13 में है। यह उद्धरण मूल इब्रानी बाइबल के वाक्यांश से लिया गया है। "पथराव किया जाए" भाले की तरह "गोली लगना" से सम्बन्धित अतिरिक्त टिप्पणी के बजाय बेहतर अनुवाद है। (KJV के बाद वाली यह अभिव्यक्ति अधिकतर प्राचीन हस्तलिपियों में नहीं है; हो सकता है कि यह यहूदी परम्परा के कारण जोड़ी गई हो।)

मूसा को डरता और कांपता होने को पुराने नियम में यहां नहीं बताया गया है परन्तु व्यवस्थाविवरण 9:19 में कहा गया है कि वह यहोवा के "कोप और जलजलाहट से डर रहा" था। इसके अलावा स्तिफनुस ने बताया कि जलती हुई झाड़ी में "मूसा कांप उठा था, यहां तक कि उसे देखने का हियाव न रहा" (प्रेरितों 7:32ख; देखें निर्गमन 3:6)। निर्गमन 19:16 बताता है कि सभी लोग डर रहे थे। यह सामान्यता स्वीकार की जाने वाली सच्चाई है और आम तौर पर यहूदी लेखों में मिल जाती है। पहाड़ के निकट आने के बजाय इस्राएली परमेश्वर की निकटता के प्रदर्शनों से डर कर पीछे हो गए थे। परमेश्वर की उपस्थिति के ऐसे प्रदर्शन से इस्राएलियों को लगा होगा कि पाप से उसके साथ सहभागिता में रुकावट आएगी।

आयतें 22-24. ये आयतें यह बताते हुए कि नये नियम के पवित्र लोग किस के पास

आए हैं, अब जबकि वे सिय्योन के पहाड़ में आए हैं, नई वाचा के पुरानी वाचा से श्रेष्ठ होने की घोषणा करती है। ''तुम ... आए हो'' (आयतें 22, 24) उसी मूल से है जिससे ''मत धारण करने वाले'' के लिए अंग्रेज़ी शब्द (*prosime* के लिए अंग्रेज़ी शब्द *roserchomai*), जिसका इस्तेमाल परिवर्तित होने वाले व्यक्ति के लिए (जो बदलता था)[44] किया गया है। इसलिए आयत 22 मनपरिवर्तन की बात हो सकती है। *Proserchomai* का यह क्रिया रूप बहुवचन है और पूर्णकाल में है, जिसका अर्थ है कि कुछ ''[मुड़ने] लगे हैं और मुड़ते जा रहे हैं।'' अब एक स्थाई स्थान पर आ गए हैं जहां उन्हें रहना चाहिए। ''पुरानी वाचा की अस्थाई स्थितियां खत्म हो चुकी हैं और अब नई वाचा की सदा तक रहने वाली शर्तें हैं''; इसमें कोई बदलाव नहीं होने वाला।[45] व्यवस्था के अधीन रहने वाले मसीही लोग उस सिस्टम से मुड़ गए थे और उन्हें मसीह के साथ बने रहना था। मसीह के पास *आकर* वे उस सब में जो नई वाचा में पाया जाता है परिवर्तित हो गए।

1. वे सीनै पर्वत के बजाय सिय्योन पहाड़ के पास आए थे। सिय्योन एक पहाड़ी थी जिस पर पुराना यरूशलेम बसा था, परन्तु पूरे पवित्र नगर का नाम इसी से था। राजा और याजक दोनों के अधिकार की गद्दी होने के कारण इसे ''पवित्र पर्वत सिय्योन'' (भजन संहिता 2:6; KJV) कहा जाता था।[46] नये नियम में सिय्योन स्वर्गीय यरूशलेम (देखें प्रकाशितवाक्य 3:12; 21:2) और यह ''ऊपर की यरूशलेम'' में परमेश्वर के निवास को दिखाता है (गलातियों 4:26)।

2. स्वर्ग पृथ्वी पर का कोई नगर नहीं होगा, परन्तु कलीसिया अर्थात मसीह की देह में प्रवेश करके ये भाई पवित्र नगर में आ गए थे। निश्चय ही यह इस बात को कहता है कि उद्धार के पास वास्तविक ''सिय्योन'' तक पहुंचकर ही आया जाता है। हम अन्ततः स्वर्ग में पहुंच जाएंगे क्योंकि हम इसके प्रतिरूप अपने प्रभु की कलीसिया के सदस्य हैं। इस प्रकार हम जीवते परमेश्वर के नगर में आ चुके हैं।

3. इस नगर में आकर हम लाखों स्वर्गदूतों के पास भी आए हैं (आयत 22)। ''लाखों'' सीमित संख्या के लिए इस्तेमाल की जाने वाली अभिव्यक्ति है। स्वर्गदूत पापियों के मन फिराने पर आनन्दित होते हैं (लूका 15:7, 10 देखें); वे स्वर्गीय पिता के सामने परमेश्वर के बालक का प्रतिनिधित्व करते रहते हैं (मत्ती 18:10) और उद्धार के वारिसों की सेवा करते हैं (देखें इब्रानियों 1:14)। कलीसिया में हम उनके पास आए हैं पर उनकी आराधना करने को नहीं, क्योंकि इसकी मनाही है (प्रकाशितवाक्य 22:8, 9)। बल्कि, वे हमारी सहायता उन ढंगों से करते हैं जिनका हमें वर्तमान में कोई ज्ञान नहीं है। वे परमेश्वर की उपस्थिति से भेजे जाकर अब हमारी सेवा करते हैं परन्तु निश्चय ही तुरन्त उसकी महिमा के लिए लौट जाते हैं (प्रकाशितवाक्य 5:11; 7:11; 19: 6)।

4. इसके अलावा हम उन पहलौठों की सभा और कलीसिया के नाम स्वर्ग में लिखे हुए हैं के पास आए हैं (आयत 23क)। यहां ''सभा'' ''कलीसिया'' के लिए इस्तेमाल होने वाला शब्द नहीं है। क्योंकि *ekklēsia* वह सभा है जिसे हम कलीसिया या चर्च के रूप में जानते हैं, उसके पास भी हम पहले ही आ चुके हैं। ''साधारण सभा'' (*panēguris*) और ''कलीसिया'' (*ekklēsia*) एक ही संस्थान के लिए शब्द हो सकते हैं, परन्तु ''साधारण सभा'' में पुराने नियम के समयों के उद्धार पाए हुए लोग भी हो सकते हैं। ''सभा'' के लिए शब्द

किसी देवी-देवता के सम्मान के लिए राष्ट्रीय जश्न का संकेत देता था और यह किसी भी जश्न की सभा के लिए इस्तेमाल होने लगा। इससे यह अनुमान लगाना बहुत बड़ी बात है कि आराधना के लिए कलीसिया की सभा उल्लासपूर्ण अवसर ही होना चाहिए।

मूल यूनानी पवित्र शास्त्र में कोई विराम चिह्न नहीं था, इस कारण वाक्य में "साधारण सभा" के अन्य शब्दों के सम्बन्ध में कुछ संदेह है। आयत 22 में इस वाक्यांश को रखते हुए NIV में "आनन्दमय सभा में हज़ारों हजार स्वर्गदूत" है। NASB में आयत 23 में इसे कलीसिया के साथ जोड़कर रखा गया है। यदि वह कलीसिया से सम्बन्धित है तो यह बड़ी सभा विश्वव्यापी संगति का सुझाव देती है।

कलीसिया के लोगों के नाम "स्वर्ग में लिखे हुए हैं" (देखें लूका 10:20; फिलिप्पियों 4:3; प्रकाशितवाक्य 21:27)। इसके अलावा, मसीही लोग "पहलौठा" (*prōtotokos*) भी हैं।[47] कलीसिया नया जन्म पाए हुओं अर्थात उन से बनती है जो मसीह में हैं। पवित्र शास्त्र हाज़िरी के स्वर्गीय रजिस्टर को मनुष्यों के साथ जोड़ता है न कि स्वर्गदूतों के साथ।[48] लूका 10:20 संकेत देता है कि हमारे नाम "स्वर्ग में लिखे" होना आश्चर्यकर्म करने की शक्ति से बढ़कर आनन्द देने वाला होना चाहिए।

5. मसीही लोगों के रूप में हम सब के न्यायी परमेश्वर के पास आए हैं (आयत 23ख)। कलीसिया में हम पिता के पास आ गए हैं और अब पूरे साहस के साथ उसके निकट आ सकते हैं (4:16)। यीशु ने कहा कि पिता तक जाने का "मार्ग" वही है (यूहन्ना 14:6)। हम परमेश्वर के पास आए हैं, इसलिए हमें पवित्र जीवन जीने का प्रयास करना आवश्यक है, ताकि हम उसकी कलीसिया में बने रहकर उसके पास-पास रहें। हमारा न्याय यीशु के द्वारा परमेश्वर करेगा (प्रेरितों 17:30, 31)। यीशु ने अपने लहू के साथ कलीसिया की कीमत इसलिए नहीं चुकाई कि लोग इसका तिरस्कार करें और इसकी अनदेखी करें (प्रेरितों 20:28)।

6. हम सिद्ध किए हुए धर्मियों की आत्माओं के पास आए हैं (आयत 23ग)। यह पूर्व-मसीही दिनों के विश्वासी हैं जिन्हें मसीह के लहू के द्वारा अब सिद्ध भी किया गया है (9:15; 10:14; 11:40), और इन में जीवित हों या मर चुके हों नये नियम के युग के पवित्र लोग हो सकते हैं।[49] अपोकलिप्टिक साहित्य में मरे हुओं को आम तौर पर "आत्माएं" कहा गया है।[50] यहूदी लेखक मृतक आत्माओं की प्रतीक्षा के स्थान की बात करते थे; क्योंकि इसका यही साधारण अर्थ होता था कि हमें मान लेना चाहिए कि यहां इसका अर्थ यही है। प्रकाशितवाक्य 7:14-17 इन आत्माओं को दिए जाने वाले वर्तमान प्रतिफल की बात कर रहा हो सकता है। मसीह को सिद्ध किया गया है (2:10) और उसके पीछे चलने के द्वारा हमें सिद्ध किया जाता है।

7. अंत में, हम नई वाचा के मध्यस्थ और छिड़काव के उस लहू के पास आए हैं जो हाबिल के लहू से उत्तम बातें कहता है (आयत 24)। नई वाचा में कलीसिया में परमेश्वर के पास आकर हम मसीह के पास आते हैं। हमारे मध्यस्थ मसीह ने, नई वाचा को परमेश्वर के पास से लाया है (9:15-17)। पुरानी वाचा के दिए जाने के समय लहू का छिड़काव किया गया था (निर्गमन 24:6-8), और पाप के हमारे विवेकों को शुद्ध करने के लिए मसीह का लहू छिड़का गया (इब्रानियों 10:22)। मसीह का लहू "हाबिल के लहू से उत्तम बातें कहता है" क्योंकि इसका अनुग्रहपूर्ण संदेश बहुत कुछ देता है। हाबिल का लहू केवल न्याय के लिए पुकारता

है (उत्पत्ति 4:10)। वास्तव में मसीह का लहू "और अनुग्रहपूर्वक" (RSV), या "उत्तम" (*kreittōn*) बातें करता है। इस नई और उत्तम वाचा की प्रतिज्ञा यिर्मयाह की भविष्यवाणी में की गई थी (31:31-34) और इस पत्री का शोध विषय है। हमारे छुटकारे के लिए क्रूस पर बहे यीशु के लहू के बिना कोई भी नई वाचा कार्यकारी नहीं हो सकती थी (मत्ती 26:28)।

अंतिम चेतावनी: परमेश्वर का इनकार करने का खतरा (12:25-29)

[25]सावधान रहो, और उस कहने वाले से मुंह न फेरो, क्योंकि वे लोग जब पृथ्वी पर के चितावनी देनेवाले से मुंह मोड़कर न बच सके, तो हम स्वर्ग पर से चितावनी करने वाले से मुंह मोड़कर क्योंकर बच सकेंगे? [26]उस समय तो उसके शब्द ने पृथ्वी को हिला दिया पर अब उसने यह प्रतिज्ञा की है, कि एक बार फिर मैं केवल पृथ्वी को नहीं, वरन आकाश को भी हिला दूंगा। [27]और यह वाक्य 'एक बार फिर' इस बात को प्रगट करता है, कि जो वस्तुएं हिलाई जाती हैं, वे सृजी हुई वस्तुएं होने के कारण टल जाएंगी; ताकि जो वस्तुएं हिलाई नहीं जातीं, वे अटल बनी रहें। [28]इस कारण हम इस राज्य को पाकर जो हिलने का नहीं, उस अनुग्रह को हाथ से न जाने दें, जिसके द्वारा हम भक्ति, और भय सहित, परमेश्वर की ऐसी आराधना कर सकते हैं जिससे वह प्रसन्न होता है। [29]क्योंकि हमारा परमेश्वर भस्म करने वाली आग है।

इब्रानियों की पुस्तक की पांचवी और अन्तिम चेतावनी का सार 12:25-29 में है। यह सार 3:7-11 वाला ही हो सकता है (जिसे LXX में भजन संहिता 95:7-11 से उद्धृत किया गया है)।

पहले 2:1-4 में इस्तेमाल किया जाने की तरह इन आयतों में एक और "हल्का और भारी" तर्क मिलता है (2:3क पर टिप्पणियां देखें)। "सावधान रहो" के लिए शब्द *blepō* वही है जिसका अनुवाद 3:12 में "चौकस रहो" किया गया है ("ध्यान दो," KJV; "सचेत रहो," NKJV)। प्रत्येक पवित्रजन के लिए, इस्राएलियों के सीनै पर्वत पर परमेश्वर पिता की बात सुनने से भी बढ़कर प्रभु की बात को ध्यान से सुनना आवश्यक है।

आयत 25. यह आयत 10:26-29 वाले विश्वासत्याग के दण्ड के सम्बन्ध में "छोटे से बड़े" तर्क जैसी है। पहले लेखक कहता है, सावधान रहो, और उस कहने वाले से मुंह न फेरो। अब हमारे साथ मूसा के बजाय मसीह बात करता है; और हमारे प्रभु की चेतावनियां उससे कहीं अधिक महत्वपूर्ण हैं। यीशु ने मूसा की भविष्यवाणी को पूरा किया कि उसके जैसा एक नबी खड़ा होगा (व्यवस्थाविवरण 18:15, 18, 19)। पतरस ने इस भविष्यवाणी को मसीह में पूरा होने के रूप में उद्धृत किया; जिस भी किसी व्यक्ति ने उसकी नहीं सुननी थी उसे "परमेश्वर के लोगों में से अलग करके नष्ट कर दिया" जाना था (प्रेरितों 3:22, 23; NLT)। परमेश्वर ने स्वर्ग से यह कहते हुए "उसकी सुनो!" मसीह के लिए अपनी स्वीकृति बता दी थी (मत्ती 17:5; मरकुस 9:7; लूका 9:35)।

नये नबी अर्थात परमेश्वर के पुत्र की सुनने से इनकार करने का परिणाम "निकाले जाना"

होना था। जंगल में घूमने के रिकॉर्ड से पता चलता है कि परमेश्वर की आज्ञाओं को तोड़ने पर लोगों को अत्यधिक कष्ट सहना पड़ा था। उन्होंने माना था कि परमेश्वर की चेतावनियां गम्भीर हैं। परमेश्वर अब हमारे साथ अपने पुत्र के द्वारा बात करता है (1:2); बेशक उसका संदेश हमें प्रेरितों और आत्मा की प्रेरणा से दिए लेखों के माध्यम से पहुंचता है। इनके द्वारा, हमें भी चेतावनी दी गई है।

चेतावनी "कहने" से अलग शब्द है; यह 8:5 और 11:7 में इस्तेमाल हुए शब्द *chrēmatizō* का ही एक रूप है। प्रेरितों 11:26 में इसका अनुवाद "कहलाए" हुआ है और इसका अर्थ "ईश्वरीय ताड़ना" हो सकता है। परमेश्वर अपने पुत्र के बलिदान के विषय में, इसी पत्री के द्वारा जो उसकी प्रेरणा से दिए वचन का भाग है, बात कर रहा था। पवित्र शास्त्र में मन फिराव की चेतावनियों की भरमार है (लूका 13:3; प्रेरितों 17:30, 31), जिसके द्वारा परमेश्वर हम से आज भी बात करता है।

आयत 26. सीनै पर्वत पर परमेश्वर का **शब्द** इतना बलशाली था कि इसकी आवाज से ही पृथ्वी हिल गई (निर्गमन 19:18): "एक बार फिर मैं न केवल पृथ्वी को वरन आकाश को भी हिला दूंगा।" भजन लिखने वाले ने पृथ्वी के कांपने की बात की (भजन सहिंता 68 :8; 114:7)।[51] हाग्गै 2:6, 7 जिसे यहां उद्धृत किया गया है, कहता है कि मसीहा के युग का चिह्न परमेश्वर के पृथ्वी और आकाश को हिलाना होगा। (मत्ती 24:29; देखें मरकुस 13:25; लूका 21:26 में यीशु ने इस अवधारणा का इस्तेमाल किया।) यशायाह 13:13 में लगभग इन्हीं शब्दों का इस्तेमाल हुआ है: "इसलिए मैं आकाश को कम्पाऊंगा, और पृथ्वी अपने स्थान से टल जाएगी; यह सेनाओं के यहोवा के रोष के कारण और उसके भड़के हुए क्रोध के दिन होगा।"[52]

आयत 27. यह आयत हाग्गै 2:6 से उद्धरण की एक संक्षिप्त व्याख्या है। कुछ लोगों का मानना है कि यह नया हिलाना मसीह के द्वितीय आगमन की ओर संकेत करता है, जब आकाश को पूरी तरह से मिटा (या **हिला**) दिया जाएगा। परन्तु हाग्गै की भविष्यवाणी को यीशु के द्वितीय आगमन के लिए इस्तेमाल करना "इस" वचन के वास्तविक बल को छीनना है–जो कि भविष्यवाणी है कि मसीह के पहले आगमन से मूसा की वाचा को हिला दिया (**हटा दिया**) जाना था।[53] हाग्गै 2:7 में "सारी जातियों की मन भावनी वस्तुएं" मसीहा और उसके आगमन की बात ही होगी, जिसमें मन्दिर को सबसे अधिक महिमा मिलनी थी।[54] पुरानी वाचा को हिलाया जा सकता था यानी हमारे भौतिक संसार की तरह ही यह टल सकती थी। इसके विपरीत नई वाचा को हिलाया नहीं जाएगा; यानी इसे हटाया या बदला नहीं जा सकता।

मसीह अनन्त अर्थात आत्मिक बातों को स्थापित करने के लिए आया। उसके नए "संसार" में प्रवृष्टि आत्मिक जन्म के द्वारा ही होती है (यूहनना 3:3–5)। अपने लिए परमेश्वर की सनातन मंशा को पाने के लिए हमारे लिए आत्मिक रूप में बढ़ते रहना आवश्यक है (2 पतरस 3:10, 11)। सृजी हुई वस्तुएं एक दिन उसे जगह देने के उद्देश्य से ही बनाई गई थीं जो स्थाई है। एक बार फिर का अर्थ "केवल एक और बार" यानी तब जब परमेश्वर पृथ्वी को हटा देगा (2 पतरस 3:10, 11)।

कुछ लोग यह कहते हुए मसीह के सुसमाचार के द्वारा संसार के व्यवहार में बदलाव से पुराना सिस्टम खत्म हो गया, इस "हिलाने" को केवल रूपक बनाने का प्रयास करते हैं। आखिर,

क्या पौलुस ने संसार को उलट-पुलट नहीं कर दिया था? (देखें प्रेरितों 17:6; KJV)। परन्तु वचन भौतिक वस्तुओं के हिलाए जाने की बात करता है जबकि आत्मिक वस्तुएं अटल रहती हैं। ''सृजित वस्तुओं'' में हिलाई जाने वाली चीज़ें हैं जैसे बनावटी धर्म और सरकारी शक्तियां। ''आत्मिक वस्तुएं'' बनी रहेंगी। इन में परमेश्वर का राज्य और उसके सब लोग आ जाते हैं।

आयत 28क. हम में से प्रत्येक को कुछ ऐसा चाहिए, जो अनन्त हो और हिलने का नहीं हो। उस आवश्यकता की पूर्ति की पेशकश हमें मसीह और परमेश्वर के राज्य में मिलती है (इफिसियों 5:5)। क्या यह अटल राज्य रोम के बड़े हथौड़ों के विपरीत, जिन्होंने शीघ्र ही आकर यरूशलेम की शहरपनाह को गिरा देना था, का स्थान ले सकता था? भौतिक संसार की हर परिवर्तनीय चीज़ के विपरीत मसीह का राज्य अनन्त और अचल है। दानिय्येल 2:44 और 7:14 में एक राज्य की भविष्यवाणी की गई थी जो कभी नष्ट नहीं हो सकता। इस राज्य जो कि कलीसिया है ''अधोलोक के फाटकों'' का भी सामना कर सकता था (मत्ती 16:18)। नगर की सब दीवारें और फाटक तोड़े जा सकते हैं पर हमारे परमेश्वर और उद्धारकर्त्ता यीशु मसीह के राज्य की दीवारों और फाटकों को नहीं।

यह वचन राज्य के पहले से ही अस्तित्व में होने की घोषणा करता है। उस राज्य में वही लोग हैं जो कलीसिया में हैं। प्रेरितों 1:3-8 में राज्य अभी भी भविष्य में था; परन्तु पिन्तेकुस्त के दिन के बाद इसे स्पष्ट रूप में अस्तित्व में दिखाया गया है (कुलुस्सियों 1:13; प्रकाशितवाक्य 1:5, 6, 9)। हम राज्य के वर्तमान अस्तित्व के तथ्य को न भूलें।

आयतें 28ख, 29. आयत 28ख में हम .... हों की एक और ताड़ना है। हमें ऐसी परिस्थिति बनाए रखने का प्रयास करना चाहिए जिसमें हमें परमेश्वर का अनुग्रह मिल रहा है। यह इस बात को कहने का एक और ढंग है, ''आओ हम दृढ़ता से थामे रहें'' (10:23)। इस ताड़ना में जिसका आरम्भ 12:18 में हुआ था, 10:25 की तरह आराधना को न छोड़ने का आग्रह हो सकता है। आयत 29 में इसका समापन व्यवस्थाविवरण 4:24 के उद्धरण से होता है,[55] जो यह अर्थ देता है कि हमारा परमेश्वर आज्ञा न मानने को सहन नहीं करता: ''क्योंकि हमारा परमेश्वर भस्म करने वाली आग है।''

परमेश्वर के आग से भस्म करने की बात बाइबल में अकेली नहीं है (देखें यशायाह 33:14)। कई आयतों में ''आग'' का उल्लेख है और उन सभी को प्रतीकात्मक बनाना कठिन है। ऐसा कोई प्रमाण नहीं है कि यहां या 10:26-29 में ''आग'' केवल एक रूपक हो।

हमें परमेश्वर की आराधना वैसे करना आवश्यक है जिससे वह प्रसन्न होता है। ''आराधना'' के लिए शब्द (*latreuō*) का इस्तेमाल पहले आराधना में याजकों की सेवा के लिए (8:5) किया जाता था और 13:10 में इसके सजातीय क्रिया रूप का इस्तेमाल हुआ है। इस शब्द का इस्तेमाल अन्य आराधकों के लिए भी हुआ है (9:9; 10:2)। इस शब्द में चाहे आराधना आ सकती है परन्तु अधिक सामान्य अर्थ में इसका अर्थ ''धार्मिक किस्म की सेवा'' है। यहां इसका अर्थ दूसरों को ध्यान में रखते हुए किए जाने वाले काम हो सकता है (जैसे 13:1-3 में) और इसमें अतिथि सेवा, कैदियों की सहायता करना, विवाह का आदर करना, और व्यभिचार तथा लोभ से बचना शामिल है (13:1-6)।

परमेश्वर की पवित्रता का भक्ति और भय ''उसकी करुणा के उत्तर में आभार भरे भरोसे

और प्रेम से उलट नहीं है।''[56] परमेश्वर की महिमा और पवित्रता का आदर करना उसके भय में रहने का एक भाग है। इस ''भय'' में वह डर भी हो सकता है कि परमेश्वर हमारे साथ क्या कर सकता है। आग से दण्ड का डर पापी के मन में सर्वशक्तिमान का भयभीत करने वाला आदर उत्पन्न करने वाला होना चाहिए।

परमेश्वर की हर आज्ञा को मानने के लिए गम्भीर होना व्यक्ति को ''कट्टर'' नहीं बना देता। हमारा काम परमेश्वर की सब आज्ञाओं को प्रेम से मानना है न कि अपेक्षित और तथाकथित सतही बातों में अन्तर करने की कोशिश करना। हम परमेश्वर को स्वीकार्य आराधना करते रहें ताकि आज्ञा न मानने के खतरनाक परिणाम से बच जाएं।

प्रासंगिकता

हम एक दौड़ में लगे हैं (12:1, 2)

हम मसीही जीवन में बेपरवाही से यूं ही टहल नहीं सकते; यानी हम एक दौड़ में हैं जिसके लिए शक्ति और धुन की आवश्यकता है। हम परमेश्वर से भटक सकते हैं (2:1), परन्तु हम परमेश्वर की ओर कभी नहीं भटकते क्योंकि उसके निकट आने के लिए प्रयास आवश्यक है। ''धीरज'' का अर्थ दृढ़ता है। यदि हमारे अन्दर यह है तो हम सब विजयी हो सकते हैं।

मसीहियत ऐसा काम नहीं है जिससे हम सेवानिवृत हो जाएंगे। मसीही लोग प्रभु के लिए अपने काम को छोड़ने की योजना नहीं बनाते। जो इतने बूढ़े हो जाते हैं कि वे काम करते नहीं रह सकते, वे जो कुछ कर सकते हैं उसे करते रहने के लिए कोशिश करते हैं। मसीही दौड़ में भाग लेने वाला व्यक्ति दूसरों की सहायता करने के ढंग ढूंढ़ लेता है। जब तक हम चल सकते हैं तब तक हम दूसरों को मन फिराव के लिए कहते रह सकते हैं।

दौड़ दौड़ना (12:1, 2)

यदि हम भूल जाएं कि हम विजय की ओर दौड़ दौड़ने वाले विश्वासियों की पंक्ति में हैं तो हम अपनी दौड़ में लड़खड़ाकर मुकुट खो सकते हैं। एक सफल धावक के मन में लक्ष्य बना रहता है और वह अपनी रफ़्तार बनाए रखता है ताकि अन्त तक दौड़ता रहे। मसीही व्यक्ति को अन्तिम रेखा तक पहुंचने के लिए किसी को हराने की आवश्यकता नहीं है। हम सब अलग-अलग समय पर अपनी दौड़ पूरी कर सकते हैं, परन्तु हमें अन्त तक दौड़ना आवश्यक है।

इस पत्री को पढ़ने वाले पहले मसीही थक कर निराश हो गए थे। हर किसी को यह समझाया जाना आवश्यक था कि वह सही पंक्ति में दौड़ रहा या रही है और अच्छा काम कर रहा है। एक अर्थ में लेखक ने कहा, ''तुम संसार की सबसे बड़ी दौड़ दौड़ रहे हो। अन्य सभी दौड़ों की जगह इस दौड़ ने ले लीं। ओलम्पिक खेलें किसी काम की नहीं हैं। यदि तुम्हें समझ आ जाए कि जिस दौड़ में तुम हो वह इतनी बड़ी है तो तुम्हें उन दौड़ों के लिए कभी जोश नहीं आएगा।''

इस दौड़ के दौड़ने वालों के लिए किसी भी रुकावट या किसी भी पाप को जो उन्हें रोकता हो, हटा देना आवश्यक था। ये रुकावटें हर किसी के लिए अलग-अलग हो सकती हैं। परमेश्वर कभी भी किसी उत्तम वस्तु को दिए बिना हम से कोई चीज़ छोड़ देने को नहीं कहता।

यीशु ने हमें दिखाया है कि दौड़ में कैसे दौड़ना है। हमारे अन्तिम रेखा को पार करने पर यीशु कह रहा होगा, ''हे पिता, ये कुछ बच्चे हैं जिन्हें तू ने मुझे दिया है'' (देखें 2:13)। उस आदर पर ध्यान करते हुए हमें वैसे ही करने के लिए विवश होना चाहिए जैसे यीशु ने किया। बेशक रास्ते में आलोचकों की ओर से कष्ट की ''लज्जा की परवाह न करते हुए'' हम अपने सिरों को ऊंचा रख सकते हैं क्योंकि हम जानते हैं कि हम किसके दौड़ने वाले या धावक हैं।

हर रुकावट को दूर करते हुए (12:1, 2)

रुकावटें कई प्रकार की हो सकती हैं, जैसे अपने घर के प्रियजनों का विरोध, अपने काम पर मज़ाक या विरोध, अपने आस पास के दुष्ट लोग जिनकी भाषा बुरी होती है। यह सब वास्तविक परीक्षाएं हैं। कई जगहों पर शैतान के दुष्ट सेवक हैं, जहां आम तौर पर हमें उनके होने की कल्पना नहीं करते। इसलिए हमें चौकस रहना आवश्यक है। जो भी हमारे रास्ते में आता है उसकी परवाह किए बिना आगे बढ़ने का अर्थ है कि अलग व्यवसाय या नये मित्रों को ढूंढ़ने के लिए वर्तमान परिस्थिति को छोड़ देना। इस दौड़ को दौड़ने का ढंग सीखना कठिन हो सकता है, विशेषकर आरम्भ में; परन्तु यीशु ने प्रतिज्ञा की है कि उसका जुआ आसान होगा और उसका बोझ हल्का होगा (मत्ती 11:28-30)।

कई बार परीक्षाएं अपने अन्दर से ही आ जाती हैं। आपको लग सकता है, ''यदि मेरे पास और पैसा हो तो मैं फलां-फलां परीक्षा में स्थिर रह सकता हूं।'' आप फिर भी आप ही रहेंगे! यह व्यवहार हमारे साथ परमेश्वर के उपाय में विश्वास की कमी का संकेत है। यदि आपको लगता है, ''यदि मैं इन परिस्थितियों में न होता तो मैं बेहतर कर सकता था,'' और उन में से निकल जाते हैं! गलत पसन्द चुनने के लिए परमेश्वर से शिकायत करके आप बदल नहीं जाएंगे या बेहतर ढंग से नहीं दौड़ेंगे। हमें वचन के और ज्ञान को बढ़ाने और इसे वफ़ादारी से मानने के लिए कोशिश करना आवश्यक है। अपने सामने आई हर परीक्षा का सामना करने में सहायता के लिए यीशु ने हर बार पवित्र शास्त्र में से उद्धृत किया। यदि हम उसके नमूने का पालन करते हैं तो भक्ति भरे हमारे जीवन भी शैतान के लिए एक बड़ी डांट होंगे।

लज्जा को तुच्छ जानना (12: 1, 2)

क्रूस का भयंकर कष्ट इससे जुड़ी लज्जा से बढ़ गया था। अपने शत्रुओं के द्वारा कपड़े उतारे जाने से भी बढ़कर हारे हुए सिपाहियों के लिए कुछ बातें अधिक परेशान करने वाली होती थीं। यह विजयी के आगे पूर्ण पराज्य और अधीनता का प्रतीक होता था। इसके अलावा कपड़े उसी के उतारे जाते थे जिसे क्रूस पर चढ़ाया जाना होता था। उसे उसके नंगेज को सब लोगों के देखने के लिए प्रदर्शित किया जाता था। दर्शकों की चमक के साथ साथ उसे लोगों के सामने नंगा किया जाता था। बहुत कम लोग उन्हें अन्दर तक आग लगा देने वालों को गालियां देने से बच सकते थे-परन्तु यीशु बच गया और उसने उनके लिए प्रार्थना की (लूका 23:34)।

मसीह ने ''लज्जा को तुच्छ जाना'' यानी इसका उसके लिए कोई अर्थ नहीं था। उसने थोड़ी देर बाद स्वर्ग में अपने पिता के साथ मिलने वाले उस सारे आनन्द की ओर आगे को देखा। बीच में स्वर्गलोक में उसने हर युग के सब धर्मियों के साथ आनन्द किया। क्रूस को सहकर वह सबसे

सम्पूर्ण परीक्षा में से गुजरा और सक्रिय विश्वास का हमारा श्रेष्ठ उदाहरण बन गया।

''यीशु पर ध्यान करो'' (12:3)

''यीशु पर ध्यान'' करते हुए हम उसके जीवन से सीखे गए सबकों को अपने ऊपर लागू कर सकते हैं। अपनी निढाल आत्माओं को हार मानने से रोकने के लिए हमें ऐसा प्रतिदिन करना चाहिए। यीशु के पथ में इस दौड़ को दौड़ने के लिए क्रूस है, चुकाने के लिए हिम्मत है। कई बार यह कीमत आर्थिक होती है। नौकरी पाने के लिए पैसे की आवश्यकता हो सकती है, हो सकता है कि जो किसी मसीही के पास न हों। यह कीमत सामाजिक हो सकती है, क्योंकि मसीही व्यक्ति ऐसे मित्रों का चुनाव नहीं करेगा जो उसे यीशु के पदचिह्नों से खींचकर दूर ले जाएं। मसीह और सरल सुसमाचार को स्वीकार करने के लिए किसी के परिवार के लोग उसे छोड़ सकते हैं।

''तंग मार्ग'' में चलने के लिए कीमत चुकाने के लिए तैयारी रहित लोग पृथ्वी पर अपनी दौड़ के अन्त में यीशु को मिलने वाले आनन्द को नहीं पा सकते। कुछ लोग ''भला करते करते थक जाते हैं'' (गलातियों 6:9; RSV) जब रास्ता लम्बा हो और जीवन के संघर्ष खत्म होते हुए दिखाई न दें। यह जानते हुए कि हम किस पर विश्वास करते हैं और सुसमाचार की रक्षा करने को तैयार खड़े होकर, हम तैयार रहें और कठिनाइयों के बीच भी मुस्कुराने की कोशिश करें (फिलिप्पियों 1:16; 2 तीमुथियुस 1:12)। नियन्त्रण परमेश्वर के हाथ में है। पाप, बुराई और अज्ञानता से अन्तिम युद्ध में जीत उसी की होगी (प्रकाशितवाक्य 17:14)।

''निराश न हो या साहस न छोड़ो'' (12:3)

जिन लड़ाइयों को लड़ते लड़ते हम थक गए उन्हें थॉमस जी. लॉन्ग ने बखूबी बयान किया है:

> ... मसीही लोग निराश होकर हिम्मत छोड़ देते हैं। वे संघर्ष से थक जाते हैं, नगर की समस्याओं से लड़ते थक जाते हैं, लोगों की आवश्यकताओं को पूरा करते थक जाते हैं जो धन्यवाद का शब्द कहे बिना चले जाते हैं, ... उन लोगों से मिलने जाते हुए थक जाते हैं जो ''कलीसिया के लिए खरीदारी करते हैं,'' अपनी ही बुरी आदतों, अपनी बुरी लालसाओं से लड़ते हुए थक जाते हैं, हल को नीचे रखकर उसके साथ अपनी इच्छाओं से लड़ते हुए थक जाते हैं। किसी और से इस पथरीली भूमि को क्यों नहीं तुड़वा लेते?[57]

एक यूनानी धावक की कहानी बताई जाती है जिसने फिनिश लाइन को पार कर लिया और चूर होकर थककर गिर गया जिससे उसकी मृत्यु हो गई। उसने रुकने से पहले अपनी दौड़ पूरी करने को पक्का कर लिया था। यीशु के नमूने को मानते हुए हम सब को भी यही करना आवश्यक है। अन्त तक धीरज रखना अनन्त उद्धार का असली आश्वासन देता है। मसीह ने ''सहा'' और उसकी विजय हमें आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित करने वाली होनी चाहिए।

सताव से बचना (12:4)

इब्रानियों की पुस्तक के मूल पाठक भागने के समय छोटे बच्चे ही होंगे जब मृत्यु से बचने के लिए तरसुस के शाऊल द्वारा किए जाने वाले सताव से उनके माता-पिता भागे होंगे (प्रेरितों 8

:1–4; 9:1; 22:4)। 10:32–34 में वर्णित बड़ी परीक्षा के बावजूद इस प्रवचन के सुनने वालों के लिए अभी शहादत देते का खतरा नहीं आया था; परन्तु 12:4 में यह संकेत हो सकता है कि इसकी पक्की सम्भावना थी। इन मसीही लोगों को यह याद रखना आवश्यक था कि लोग शरीर को मार सकते हैं, परन्तु वे केवल इतना ही कर सकते हैं (लूका 12:4; मत्ती 10:28)। यीशु ने कहा था, "कोई उन्हें मेरे हाथ से छीन न लेगा" (यूहन्ना 10:28)। हमारे अपने से बाहर का कोई भी स्रोत हमारी आत्मा को नष्ट नहीं कर सकता। परन्तु यदि हम मसीही दौड़ अच्छी तरह से न दौड़ें तो हम अनन्त आशिषों को खो सकते हैं (गलातियों 5:4, 7)।

हमें ध्यान रखना आवश्यक है कि हम लोगों के विरुद्ध नहीं हैं बल्कि "पाप के विरुद्ध प्रयास कर" रहे हैं। हमें सदाचारी जीवन तथा आत्मिक शिक्षा में विश्वासत्याग से खतरनाक लड़ाई से लड़ना आवश्यक है।

मसीह के लिए दुःख सहना (12:4–6)

जिनका पालन-पोषण अनुशासन रहित माहौल में हुआ होता है उन्हें इस जीवन में उस अनुशासन को मानना कठिन होता है जो परमेश्वर उन्हें देता है। परन्तु इस पत्री के प्राप्तकर्त्ताओं के लिए इस अवधारणा को समझना आसान होना चाहिए था।

साम्यवाद के अन्त से पहले पोलैण्ड में वेलैंटी डेविडो नामक एक स्थानीय सुसमाचार प्रचारक को अपनी सेवकाई के बारे में बताने के लिए अधिकारियों के सामने बुलाया गया। उन्होंने उससे पूछा कि क्या वह पोलैण्ड में कलीसिया का मुखिया है। उसने निडरता से उत्तर दिया, "पोलैण्ड में मैं मसीह की कलीसिया का मुखिया यानी सिर नहीं हूं। इसका सिर केवल मसीह है!" उसे सादा सुसमाचार सुनाने रहने की अनुमति दे दी गई। हमें "हिम्मत रखनी और नम्रता और भय के साथ" उत्तर देने को तैयार रहना चाहिए (1 पतरस 3:15), चाहे इसके लिए हमें दुःख उठाना पड़े। हमें आत्मिक जीवन की सच्चाई बताना आवश्यक है क्योंकि भक्ति के साथ जीवन बिताने वाले सब लोग किसी न किसी प्रकार से सताए जाएंगे (2 तीमुथियुस 3:12)।

हमें किसी प्रकार नम्र होकर और परमेश्वर को प्रसन्न करके दुःख उठाना पड़ सकता है। परमेश्वर अपने बच्चों की ताड़ना करता है, और यह ताड़ना दूसरों के द्वारा भी हो सकती है। हमारी आलोचना करके आहत करने वाले के साथ हमारी कैसे पटती है? जीवन का हमारा लक्ष्य हमारी इच्छा के अनुसार दूसरों के हमें स्वीकार करना नहीं होना चाहिए, बल्कि परमेश्वर के ढंग से उसे ग्रहण करना होना चाहिए। परमेश्वर हमारे आहत होने को देख सकता है और हमें दूसरों को दिए जाने वाले दुःख के लिए क्षमा कर सकता है। हमें वैसे ही सहना आवश्यक है जैसे मसीह ने "सहा" (12:3)।

ताड़ना के लाभ (12:7–11)

ताड़ना के तीन उद्देश्य हैं: यह हमारी गलतियों को सुधारती है, हमारे विश्वास को मज़बूत करती है और हमारी अनन्त भलाई को बढ़ाती है।[58] सफल और संतुष्ट होने के लिए इस जीवन में हमें हर उस चीज़ की आवश्यकता नहीं होती जिसे हम चाहते हों (मत्ती 6:25–34)। हमें ताड़ना के लिए प्रार्थना करनी चाहिए, पर हम कभी करते नहीं हैं। शायद यही एक कारण है कि

पौलुस ने लिखा, ''हम नहीं जानते कि प्रार्थना किस रीति से करनी चाहिए'' (रोमियों 8:26)। आत्मिक रूप में मज़बूत बनने के लिए हमें उन बातों के लिए प्रार्थना करना सीखना आवश्यक है जो बढ़ने में हमारी सहायता करें, चाहे हम उन्हें चाहते हों या न। यदि हम परमेश्वर की ताड़ना पर ध्यान नहीं देते तो हो सकता है कि वह हमें बार-बार ताड़ना दे। बहुत से धर्मों में यह सिखाया जाता है कि अपने देवी देवताओं को प्रसन्न करने वाले पर दुःख नहीं आएगा। इसके विपरीत पुराना और नया दोनों नियम बताते हैं कि दुःख उठाना शुद्धिकरण और पवित्रीकरण का काम करता है। आयत 11 इसे ''ताड़ना'' कहती है। दुःख आने पर हमें कैसे पता चल सकता है कि यह परमेश्वर की ओर से ताड़ना है। हमें पता नहीं चल सकता क्योंकि आज व्यक्तिगत प्रकाशन नहीं दिए जाते हैं। हमें बस मान लेना चाहिए कि समस्याएं अनुशासन या ताड़ना की तरह लाभ देने वाली हो सकती हैं। कुछ समय के बाद पीछे मुड़कर देखने से हमें समझ आ सकता है कि परेशानियों ने किस प्रकार से हमारी आत्मिक भलाई के लिए काम किया। निश्चय ही हम पक्का कह सकते हैं परमेश्वर हर हाल में हमारे साथ है।

गलत ताड़ना (12:9-11)

''बच्चे को दुलार में बिगाड़ देना'' वाली बात नहीं है परन्तु इसका संकेत है: ''लड़के की ताड़ना न छोड़ना; क्योंकि यदि तू उसको छड़ी से मारे, तो वह न मरेगा। तू उसको छड़ी से मारकर उसका प्राण अधोलोक से बचाएगा'' (नीतिवचन 23:13, 14)। विरोधी माता-पिता इससे आगे बढ़ सकते हैं और बाइबल इसकी निंदा करती है (नीतिवचन 19:18)। प्रेमी माता-पिता जानते हैं कि किस प्रकार से प्रभावशाली ढंग से प्रोत्साहित करना व दण्ड दिया जाना चाहिए। जो माता-पिता सही ढंग से अनुशासन या ताड़ना करते हैं बदले में वे बहुत सा स्नेही प्रेम पाते हैं। आज के हमारे संसार के अपराध और दोष का मुख्य कारण अनुशासन या ताड़ना की कमी ही है।

''ताड़ना न कि फटकार'' (12:9-11)

कैल्विनवादी शिक्षा को मानने वाले लोग कहते हैं, ''परमेश्वर अपने बालक को ताड़ना देगा परन्तु उसे फटकारेगा नहीं, क्योंकि वह ऐसा नहीं कर सकता।'' केवल परमेश्वर के प्रेम और करुणा पर रहने वाले व्यक्ति (रोमियों 8:33) की तरह इस बात को नज़रअन्दाज़ कर सकता है कि ताड़ना ''काट डाला'' जाने का कारण बन सकती है (रोमियों 11:22)। यह दावा करना कि ''अनुग्रह सब कुछ जीत लेता है'' इब्रानियों की पुस्तक 6:4-6 और 10:26-29 की इसकी शिक्षा को बिगाड़ता है।

दाऊद का पाप क्षमा किया गया था ताकि वे मर न जाए, परन्तु अपने पाप के परिणाम के रूप में उसे दुःखों और परेशानियों का सामना करना ही पड़ा (2 शमूएल 12:11-15; गलातियों 6:7)। उसके बच्चे की मृत्यु हो गई, अम्नोन ने तामार की इज्जत लूटी, अबशालोम ने अम्नोन को मार डाला, अबशालोम ने दाऊद को गद्दी से उतार दिया और फिर अबशालोम मारा गया।

बहुत से विश्वासी पवित्र जनों को बहुत हद तक दुःख उठाना पड़ा, और कई लोग विनम्र हो गए हो सकते हैं क्योंकि उनके दुःख ने उन्हें पूरी तरह से अधीन कर दिया। हो सकता है कि आप के दुःख का समय आ रहा हो। सूर्य सदा धर्मियों को ही रौशनी नहीं देता; भोले और दोषी

दोनों इस जीवन में दुख पाते हैं। कभी न कभी पवित्र शास्त्र का यह भाग हर किसी पर लागू होगा। परमेश्वर का पाप रहित एक पुत्र था, परन्तु दुःख से रहित कोई नहीं।

आनन्द और मसीहियत (12:11)

कुछ धार्मिक समूहों के सदस्य बताते हैं कि वे प्रभु में कितने प्रसन्न हैं। वे जीवन को आनन्दमय और मस्त बनाते हैं। बेशक हमारा प्रभु हमें ''धन्य'' बनाना चाहता है (मत्ती 5:3–11) जिसका अर्थ कुछ लोग ''प्रसन्न'' लेते हैं, परन्तु यह किसी प्रकार इस के अर्थ को खींचना ही है। जो धर्म यह सोचता है कि व्यक्ति मुस्कुराते रहना चाहिए जिसमें उसके जीवन के बोझ, शोक या जीवन में रहने का कोई ताड़ना न दिखाई दे, छिछला और झूठा है। ऐसी सोच के प्रभाव वाली कुछ कलीसियाओं ने मण्डली को प्रसन्न रखने तथा और सदस्यों को आकर्षित करने के लिए ''हम जश्न में रहते हैं'' वाला व्यवहार अपना लिया है। लोग अपने आपको प्रसन्न दिखाकर जबकि वह वास्तव में हों न, अपने आपको धोखा दे सकते हैं।

सचमुच में धन्य होना मन की अपनी निर्धनता को मान लेने और इस पर शोक करने से होता है (मत्ती 5:3, 4)। यह अपना क्रूस उठाना सीखने पर मिलता है (मत्ती 16:24)। अब हमें शोक करना आवश्यक है: ''हाय तुम पर जो अब हंसते हो, क्योंकि शोक करोगे और रोओगे'' (लूका 6:25ख)। कई बार उस सारी ताड़ना पर जो परमेश्वर की अनुमति से हमें मिलती है, आनन्द करने का कोई कारण नहीं होता। बेशक एक बनावटी किस्म की अस्वस्थता भी है। कुछ लोगों को लगता है कि दुःखी दिखाई देकर वे अधिक पवित्र लगते हैं, परन्तु असली मसीहियत इन दोनों में से कोई नहीं है।

''... ताड़ना आनन्द की नहीं, पर शोक की ही बात दिखाई पड़ती है'' (इब्रानियों 12:11), इस कारण हमें लगता है कि हमें आनन्दमय लगना चाहिए। यदि हम पूरी तरह से धर्मी हो सकते तो परमेश्वर हम से यह उम्मीद कर सकता था, परन्तु वह जानता है कि सबसे बड़ा आत्मिक लाभ दुःख सहने के अस्थाई समय से ही मिलता है।

सबसे बड़ा आनन्द यह समझ आने से मिलता है कि हमारे दुःख सहने से परमेश्वर की ओर से लाभ मिलते हैं और यह जानना कि हमारे अनन्त आनन्द के मुकाबले में यह थोड़ी देर का है (2 कुरिन्थियों 4:16, 17)। पहले तो हमें ''बिल्कुल पापपूर्ण'' (''अत्यधिक पापपूर्ण''; ASV) कामों पर सोचना चाहिए जो हमारे जीवनों और हमारे आस पास के संसार में व्याप्त हो सकते हैं (रोमियों 7:13)। इस कदम के बिना आनन्दमय उद्धार के लिए हमारा कोई कदम कारगर नहीं हो सकता। इसमें कोई संदेह नहीं है कि धन्यवचनों में यीशु ने सबसे पहले ''शोक'' को स्थान दिया (मत्ती 5:4)।

दुःखों और असफलताओं पर शोक करने को हम कमज़ोरी न मानें। हम अफ़सोस करते हैं परन्तु ''दूसरों के समान नहीं जिन्हें आशा नहीं'' (1 थिस्सलुनीकियों 4:13)। दीन बालकों के रूप में और बढ़ने के लिए ताड़ना की पीड़ा को जानना कोई कमज़ोरी नहीं है। आनन्द उन्हीं को मिलता है जो दुःख उठाते हैं और इसका फल काटने के लिए तैयार किए गए हैं।

समस्या यह है कि जैसा दिखाई देता है हमेशा वैसा नहीं होता। इब्रानियों के लेखक ने यह नहीं कहा कि हमारा वर्तमान दुःख उत्सव और उल्लास के जीवन में बदल जाएगा बल्कि इसका

परिणाम ''शांति का प्रतिफल'' होगा (12:11)। शांति का खामोश आश्वासन हमारे परखे हुए और विश्वसनीय विश्वास से मिलेगा। कितना स्वादिष्ठ फल है! फिर विश्वास के द्वारा हम उस शान्ति में खलल डालने से अपनी समस्याओं को रोक लेंगे।

इस संसार में तीन रिश्ते (12:14-17)

हमारा वचन पाठ उन तीन कीमती रिश्तों के बारे में बताता है जिनका पीछा मसीही व्यक्ति को करना चाहिए। पहले, हमारा रिश्ता *परमेश्वर के साथ* ''पवित्रता'' का हो सकता है (आयत 14)। परमेश्वर पूर्णतया पवित्र है, इस कारण उसके साथ सम्बन्ध के लिए यह सार होना आवश्यक है। ''पवित्रता'' ''शुद्धता'' जैसी अवधारणा ही है जिसका अर्थ ''अलग,'' ''पृथक'' या ''सम्पूर्ण'' होना है। ''जैसा तुम्हारा बुलाने वाला पवित्र है, वैसे ही तुम भी ... पवित्र बनो'' (1 पतरस 1:14, 15) की आज्ञा बाइबल की सबसे कठिन आज्ञा हो सकती है।[59] हम पवित्र कैसे बनें? अपने जीवनों को पूरी तरह से परमेश्वर की इच्छा के आगे सौंप दें।

दूसरा, *हमें दूसरों के साथ मेल* करने की कोशिश करनी आवश्यक है (आयत 14)। मसीह के बाहर लोगों के साथ हमारे सम्बन्ध उन्हें उस में आने के लिए प्रभावित कर सकते हैं (देखें रोमियों 12:18)। लड़ने के लिए दो लोगों का होना आवश्यक है परन्तु यदि हम मेल या सुलह के लिए काम करते हैं तो छोटे छोटे झगड़ों की आवश्यकता नहीं होती। हर जगह ऐल्डरों के बीच में कम से कम एक व्यक्ति होना आवश्यक है जो मेल की परवाह करता हो। बेशक हर ऐल्डर और हर मसीही को बिना समझौता किए परमेश्वर की सच्चाई के लिए खड़ा होना आवश्यक है; परन्तु सच्चाई से प्रेम करके भी हठीले लोगों की चिंता की जा सकती है।

तीसरा, हमें ''ध्यान से देखते [रहकर] ऐसा न हो कि कोई परमेश्वर के अनुग्रह से वंचित रह जाए'' *अपने साथी मसीही लोगों की सहायता* करना आवश्यक है (आयत 15क)। हमें दूसरे मसीही लोगों के लिए बोझ उठाने के लिए सहायता करनी चाहिए (गलातियों 6:2)। परमेश्वर के लोगों के रूप में हमारी सफलता इन तीन सम्बन्धों पर टिकी है।

एसाव, एक व्यभिचारी और भक्तिहीन व्यक्ति (12:15-17)

एसाव भक्तिहीन था, क्योंकि उसने थोड़ी देर के शारीरिक सुख के लिए अपनी आत्मिक दिलचस्पी को छोड़ दिया। सताव सहते हुए दुःख से राहत पाने के लिए इब्रानी मसीही परमेश्वर की प्रतिज्ञा को छोड़ देने के कगार पर होंगे।

स्पष्टतया एसाव व्यभिचारी भी था (''दुराचारी''; NKJV) उसकी अभिलाषा उसे गिरावट की ओर ले जाती रही। परमेश्वर की आज्ञा कि ''तू व्यभिचार न करना'' (निर्गमन 20:14) मूसा के सीनै पहाड़ पर जाने से बहुत पहले लागू थी। ''व्यभिचार'' के पाप को कोई बात सही नहीं ठहरा सकती, जिसका अर्थ किसी भी प्रकार की अनुचित शारीरिक गतिविधि है। इसे गलत ठहराने वाला शब्द *porneia* जिसमें वेश्यावृति, सगे सम्बन्धियों के बीच यौन सम्बन्ध और विवाह के बंधन के बाहर विषमलिंगकामी सम्बन्धों के साथ-साथ समलैंगिक गतिविधियों जैसे हर प्रकार की यौन व्यभिचार शामिल हैं। कुछ अनुवादों में *porneia* को ''यौन दुराचार'' या केवल ''दुराचार'' किया गया है। शब्दकोषों में इसकी परिभाषा ''अवैध यौन सम्बन्ध'' के रूप

में की जाती है। KJV में इसका अनुवाद बीस से अधिक बार ''व्यभिचार'' के रूप में किया गया है। NASB में मत्ती 5:32 में यह ''व्यभिचार'' और मत्ती 19:9 में ''दुराचार'' के रूप में है।

कुछ लोग यह कहते हुए कि ''दोनों पक्षों की सहमति थी'' दुराचार को उचित ठहराते हैं। यदि कोई बेईमान कर्मचारी किसी अपराधी को बैंक लूटने में सहायता करने के लिए सहमत हो जाता है, तो इसका अर्थ यह नहीं है कि वह सही है। व्यभिचार होने पर किसी के साथ धोखा हो रहा होता है। पौलुस ने इसे एक तथ्य बताया (1 थिस्सलुनीकियों 4:3-8)। यदि किसी भी पक्ष को लगता नहीं है कि कुछ गलत है, तो भी परमेश्वर को एक धर्मी आत्मा से वंचित किया जा रहा है। ऐसा पाप व्यक्ति को जीवन भर के लिए अपंग बनाकर उसे उस स्तर तक उठने से रोक सकता है जो उसे राज्य में मिल सकता था। परमेश्वर द्वारा पूरी तरह से क्षमा कर दिए जाने के बावजूद, जैसा कि दाऊद के मामले में मिलता है, ऐसा होगा भी (देखें 2 शमूएल 12)। यूसुफ ने व्यभिचार को पाप माना और पोतीपर की पत्नी के हाथ नहीं आया (उत्पत्ति 39:9)। यौन पाप परमेश्वर के विरुद्ध, अपने शरीर के विरुद्ध (1 कुरिन्थियों 6:18), कलीसिया के विरुद्ध, अपने विवाह के विरुद्ध पाप है, और इतना विनाशकारी है कि इसके कारण परमेश्वर की तलाक की अनुमति दे देता है (मत्ती 19:9)। यह देश की भलाई के विरुद्ध और अपने ही प्राण के विरुद्ध पाप है (नीतिवचन 6:32)।[60]

एसाव ने आंसू बहा बहाकर मन फिराना चाहा (12:17)

एसाव ने बिलख-बिलख कर पुकारा होगा परन्तु उसकी विनती का कोई उत्तर नहीं दिया गया। इसके विपरीत यीशु पर ध्यान दें, जिसकी ''भक्ति के कारण उसकी सुनी गई'' (इब्रानियों 5:7) जब आंसू बहा बहाकर उसने गतसमनी में सहायता मांगी (लूका 22:44)। यीशु की प्रार्थना सुनी गई (और उसका उत्तर भी दिया गया) थी। एसाव और यीशु दोनों रोए थे परन्तु यीशु सर्वशक्तिमान पिता के प्रति गहरे सम्मान के साथ रोया था जो प्रार्थना का उत्तर दे सकता था, जबकि एसाव अपनी स्वार्थी इच्छाओं के कारण रोया था। कई मामलों में यह बात इस प्रश्न का उत्तर हो सकती है कि ''मेरी प्रार्थनाएं क्यों नहीं सुनी जातीं?'' (देखें याकूब 4:2, 3.)

काली घटा, आग, अंधेरा, और आंधी (12:18-21)

सीनै पर्वत पर दृश्य और आवाज़ें भयभीत कर देने वाले थे। वे लोगों को उस दिन के बाद से परमेश्वर की सुनने के लिए प्रेरित करने के लिए थे। काली घटा, आग, अंधकार और भयंकर आंधी से मौत का खौफ लगने लगा। कोई आश्चर्य नहीं कि पुरानी वाचा को ''मृत्यु की वाचा'' कहा गया था (2 कुरिन्थियों 3:7)! इससे यह दिखाया कि मृत्यु पाप के कारण होती है। यहां तक कि मूसा भी हिल गया था (आयत 21)।

इस सारे अंधकार और विनाश का अपने पाठकों को बताने का इब्रानियों की पुस्तक के लेखक का क्या उद्देश्य था? वह उस में जो सीनै पहाड़ पर यहूदियों के साथ हुआ था (उनके पूर्वजों के द्वारा) और उसमें जो मसीह में मिलता है अन्तर दिखा रहा था। आत्मिक बचपन के पहले समय में परमेश्वर ने पाप और इसके परिणामों पर ज़ोर दिया था (गलातियों 3:19)। नई वाचा अलग है।

पुरानी वाचा दिए जाने के समय के बाहरी प्रदर्शनों में लोगों को पाप के विषय में, इसके

काम करने के ढंग के बारे में और इससे बचने के तरीके लोगों को बताने के लिए दिए गए थे। पुराने नियम का मुख्य उद्देश्य यह दिखाना था कि परमेश्वर की आज्ञा कैसे मानी जाए जबकि नये नियम का मुख्य उद्देश्य मसीह की आज्ञा मानने के ढंग को बताना है। अन्यजातियों वाली कलीसियाओं के लोगों से पौलुस ने कहा, ''व्यवस्था मसीह तक पहुंचाने के लिए हमारी शिक्षक हुई है'' (गलातियों 3:24)। यह चौंकाने वाली सच्चाई है जो हमें मसीह के पास आने के परमेश्वर के पहले ढंग को सिखाती है! पुराना नियम परमेश्वर के ग़ज़ब को दिखाता है, उसने अविश्वासी लोगों के साथ क्या किया है और यदि हम अविश्वासी हों तो वह हमारे साथ क्या कर सकता है। व्यवस्था ने अपना उद्देश्य पूरा किया, परन्तु हमारे पास कुछ ऐसा है जो इससे कहीं बढ़कर है।

हमारा परमेश्वर भयदायक परमेश्वर है (12:18-24)

किसी भी प्राण को आतंकित करने के लिए पहाड़ के आस-पास की गरज और चमक वाला खतरनाक अंधेरा ही काफ़ी था। उस समय होने वाला पृथ्वी का कंपकंपाना लोगों के लिए अब तक का सबसे भयभीत करने वाला और डरावना दृश्य था। कहीं भागने का, कहीं छिप जाने का, इसे रोकने का कोई तरीका नहीं है। इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि प्राचीनकाल के लोग भूकम्प को परमेश्वर का कार्य मानते थे! तुरही, आंधी और चेतावनी की शोर भरी आवाज़ कि पहाड़ को कोई चीज़ न छुए, और भी भयभीत करने वाला था। मूसा तक ने कह दिया, ''मैं बहुत डरता और कांपता हूं'' (आयत 21)।

यह सब क्यों हुआ? परमेश्वर और उसके नियमों के प्रति आदर डालने के लिए, लोगों को पाप के विरुद्ध उसके भयंकर न्यायों को बताने के लिए, और उसकी आज्ञाओं को पूरी आज्ञाकारिता से मनवाने के लिए भय उत्पन्न करने के लिए। परमेश्वर के दण्ड का भय खोए हुओं के लिए बहुत बड़ा है, जब उन्हें इसकी समझ आ जाती है। वे जीवन भर क्रोध करते रह सकते हैं। बहुत से नास्तिक लोग मृत्यु के समय यह सोचकर कि जीवन भर परमेश्वर के अस्तित्व के विषय में वे गलत थे, कंपकंपाते और थरथराते हैं। अपनी हठी इच्छाओं से अपने मनों को कठोर करके उन्हें पाप से गुमराह होकर जीवन बिताने वाले कुछ लोग मृत्यु को निकट आते देख बदलने के अवसर के इच्छुक होते हैं। जीवित परमेश्वर के हाथों में पड़ना भयभीत कर देने वाली बात है (10:31)।

हम मसीह और उसकी कलीसिया के पास आए हैं (12:22-24)

इब्रानी मसीही लोग आत्मिक पहाड़ के पास आए थे जिसे देखा या छुआ नहीं जा सकता था और जो किसी को डराता नहीं था। हमें अब परमेश्वर के सामने आने के लिए डरने की कोई आवश्यकता नहीं है (4:15, 16)। मसीह में हम जिसके पास आए हैं उसकी महिमा लगभग अकल्पनीय है। परमेश्वर का राज्य शोरगुल भरी तुरहियों वाला, शोर शराबे वाला स्थान नहीं बल्कि एक शांत आत्मिक नगर है। हर युग से पवित्र लोग वहां इकट्ठा होते हैं और हम उनके साथ मिल जाते हैं। राज्य में प्रवेश करने पर हमारे नाम स्वर्ग में लिख दिए जाते हैं। हम इतने स्वर्गदूतों के द्वारा आशीष पाते हैं जिनकी कोई गिनती नहीं कर सकता क्योंकि उन ''की गिनती लाखों और करोड़ों की'' है (प्रकाशितवाक्य 5:11)।

हमारे नाम कैसे लिखे जाते हैं? हम परमेश्वर के पास कैसे आए हैं जिसे हम देख नहीं

सकते ? हम यीशु के पास आए हैं और अब वह हमारे साथ-साथ है, परन्तु यह विश्वास की बात है। उसकी निकटता को बाइबल में प्रकट किया गया है और हमें उस पर विश्वास करना आवश्यक है। हम अज्ञानता के अंधेरे में नहीं बल्कि ज्योति में रहते हैं। उसके द्वारा जो प्रकट किया गया है हमें परमेश्वर और यीशु के बारे में जानने के लिए आवश्यक हर बात का पता चल सकता है।

यह सब सच है क्योंकि उसकी देह, कलीसिया, स्वर्गीय राज्य में मिलाए जाकर हम मसीह के पास आए हैं। यह तब हुआ जब हम मसीह में बपतिस्मा लेकर विश्वास से परमेश्वर की संतान बन गए (गलातियों 3:26, 27)।

नाम स्वर्ग में लिखे गए (12:23)

पौलुस कम से कम कुछ लोगों को जानता था जिनके नाम स्वर्ग में लिखे गए थे (फिलिप्पियों 4:3)। क्या उसने उनके नाम उस पुस्तक में पढ़े, शायद उस दर्शन में जिसकी बात उसने 2 कुरिन्थियों 12:1-4 में की ? पौलुस ने शब्दों में प्रकाशन पाया हो सकता है या केवल लिखा हो सकता है कि उसे यूओदिया, सुन्तुखे और क्लेमैंट जैसे लोगों के स्वभाव का पता था। वह उनके जीवन को जानता था इस कारण उसे पक्का निश्चय था कि उनका अनन्त भविष्य क्या है। पौलुस से यह सुनना कितना आनन्द देने वाला होगा कि "मार्टल, तेरा नाम स्वर्ग में लिखा गया है"! हमें ऐसा आश्वासन नहीं दिया गया है, परन्तु यदि हम ने सुसमाचार की आज्ञा मानी है (मरकुस 16:16; प्रेरितों 2:38) और विश्वास में पवित्र जीने के लिए प्रतिदिन प्रयास कर रहे हैं, तो हम "जान [सकते हैं] कि अनन्त जीवन [हमारा] है" (1 यूहन्ना 5:13)।

इसके विपरीत: मसीही लोगों के लिए जश्न (12:22-24)

नई वाचा भय को मिटाकर आनन्द दिलाती है। क्यों ? क्योंकि मसीही लोगों को सीनै के भय और कंपकंपी से मुक्त किया गया है:

> क्योंकि जो काम व्यवस्था शरीर के कारण दुर्बल होकर न कर सकी, उस को परमेश्वर ने किया, अर्थात अपने ही पुत्र को पापमय शरीर की समानता में, और पाप के बलिदान होने के लिए भेजकर, शरीर में पाप पर दण्ड की आज्ञा दी। इसलिए कि व्यवस्था की विधि हम में जो शरीर के अनुसार नहीं वरन आत्मा के अनुसार चलते हैं, पूरी की जाए (रोमियों 8:3, 4)।

हम पाप की दासता को दिखाते पहाड़ के पास *नहीं आए हैं* (गलातियों 4:21-26)। इसके विपरीत, जीवित परमेश्वर के स्वतन्त्र नगर सिय्योन पहाड़ के पास *आए हैं,* जो कि स्वर्गीय यरूशलेम हैं। हम सहायता करने वाले असंख्य स्वर्गदूतों के पास, पहलौठों की कलीसिया के पास *आए हैं,* जिनके नाम स्वर्ग में लिखे हुए हैं। हम यीशु के निमन्त्रण के उत्तर में उसके पास *आए हैं* (मत्ती 11:28-30; प्रकाशितवाक्य 22:17)। उस में हम अपने महान न्यायी परमेश्वर के पास आने के साथ, पाप की मज़दूरी और इसके परिणामों से विश्राम का आनन्द लेते हैं। कलीसिया में हम हर युग के लोगों की आत्माओं के साथ मिल जाते हैं जिन्हें मेमने के लहू में सिद्ध किया गया

है (प्रकाशितवाक्य 7:13, 14)। वह लहू पुकारता है, ''तुम्हें क्षमा कर दिया गया है! अब तुम्हें तुम्हारे लिए प्रायश्चित के मेरे लहू के बलिदान के कारण सिद्ध कर दिया गया है।''

यदि हम उन सभी आशिषों को समझ सकें जो कलीसिया में हमें मिली हैं तो हमारे लिए हर दिन आनन्द का दिन होगा। कुछ लोग इन आशिषों के केवल भविष्य में होने की बात कहते हैं, जैसे हम ''स्वर्गीय नगर के पास न आए हों'' परन्तु इब्रानियों की पुस्तक के लेखक ने कहा कि ''तुम ... आए हो ...'' (आयतें 22, 24)। पृथ्वी पर देह में रहते हुए भी हमारी नागरिकता स्वर्ग में भी है (फिलिप्पियों 3:20)। हम अपने उद्धारकर्त्ता के प्रकट होने की राह उत्सुकता से देख रहे हैं, परन्तु अब हमें उसकी महिमा की एक झलक मिली है।

कहने वाले से मुंह न फेरो (12:25)

परमेश्वर ने पुराने नियम में बातें कीं। परन्तु नये नियम में इस बार अपने पुत्र के द्वारा उसने और भी शक्तिशाली ढंग से बातें की हैं (1:1, 2)। नये नियम वाला परमेश्वर वही परमेश्वर है जो पुराने नियम में था, परन्तु वह बात अलग ढंग से करता है। यह बात मुख्य है, जो इब्रानियों की पुस्तक में मुख्य विचार है। 12:25 में चाहे बोलने वाले की पहचान नहीं दी गई परन्तु स्पष्टतया यह परमेश्वर ही है। यदि हम उसके वचन को सुनने से इनकार करें या उसका अपमान करें तो हमें खतरनाक परिणाम भुगतने पड़ सकते हैं। अपनी प्रेरणा दिए प्रवक्ताओं के द्वारा स्वर्ग से उसने उनके द्वारा पहली सदी में बोले और लिखे गए शब्दों के द्वारा हमें चेतावनी दे दी है। इब्रानियों की पुस्तक में परमेश्वर की ओर से ऐसा ही संदेश है कि जो व्यक्ति इसके देने वाले का इनकार करता और इसके अधिकार और शिक्षा को नकारता है उसे अनन्त दण्ड का सामना करना पड़ेगा।

2:3 में एक प्रश्न पूछा गया था कि ''कैसे बच सकते हैं ... ?'' उसका उत्तर यहां दिया गया है: ''वे लोग जो जब पृथ्वी पर के चेतावनी देने वाले से मुंह मोड़कर न बच सके, तो हम स्वर्ग पर से चेतावनी देने वाले से मुंह मोड़कर कैसे बच सकेंगे'' (12:25)। परमेश्वर के अधिकार को ठुकराने वालों के लिए बचाव का कोई रास्ता नहीं, वे नष्ट हो जाएंगे।

द्वितीय आगमन के समय सीनै पर बोलने वाली भयंकर आवाज घोषणा करेगी कि ''समय खत्म हुआ!'' प्रभु की आवाज में सारी पृथ्वी को हिला देने की शक्ति है (आयतें 26-28)। भविष्य के न्याय (9:27), पूर्ण विश्वासत्याग के परिणामों (6:4-6; 10:26-29) और ''हिलाए जा सकने वाले संसार'' के अन्त की चेतावनियां जारी कर दी गई हैं। समय आने पर दिखाई देने वाला सारा संसार नष्ट हो जाएगा (2 पतरस 3:5-7, 10-13)। परमेश्वर का धन्यवाद हो कि हम उस अनन्त राज्य के भाग हैं जो हिलाने से कभी टल नहीं सकता (12:28)।

हमारा परमेश्वर भस्म करने वाली आग है (12:28, 29)

परमेश्वर की सही आराधना के लिए तीन मानदण्ड: (1) यह स्वीकार्य ढंग से परमेश्वर के लिए हो, (2) यह भक्ति से की गई हो और (3) परमेश्वर के भय में की गई हो जो ''भस्म करने वाली आग है।'' हमें स्वीकार्य ढंग से अराधना करने के लिए अपने मनों में परमेश्वर की महानता को मानना आावश्यक है। उसे सही तरह से समझने और उसकी अराधना करने के लिए हमें उसके अपरिवर्तनीय स्वभाव को समझना आवश्यक है कि वह धर्मी है और पाप को दण्ड देता है।

हमें परमेश्वर के अनुग्रह के बारे में जो हमारे पास रहता है सुनना अच्छा लगता है, नरक की भस्म करने वाली आग का प्रचार करने वाले प्रचारकों को सुनना हमें नापसन्द है। कइयों को ऐसा प्रचार परेशान करने वाला, अशोभनीय, और गंवारू, और कम पढ़े लिखे युग का लगता है। आज कुछ लोग दावा करते हैं कि दोषियों का दण्ड अनन्तकाल का नहीं है।

इब्रानियों की पुस्तक का यह वचन हमें कार्य करने के लिए उकसाने के लिए बनाया गया है ताकि हम आग और गंधक के अनन्तकाल से बच सकें। क्या न्याय और नरक की आग की बात करना, जिसमें आज्ञा मानने के लिए पापियों को डराना हो, गलत है? यदि हां, तो इब्रानियों के प्रचारक को इसका पता नहीं था। ''भस्म करने वाली आग'' (TEV) वाक्यांश में ''यहां 10:27 में आग के 'खोट निकालने' या 'शुद्ध करने' जैसा कोई सुझाव नहीं है।'[161] यह दुष्ट को दोषी ठहराने और निरन्तर दण्ड से सम्बन्धित बात है (देखें प्रकाशितवाक्य 14:11; 20:10; 21:8)।

टिप्पणियां

[1]दौड़ के रूपक का इस्तेमाल पुराने और नये दोनों नियमों में हुआ है; परन्तु नये नियम में, विशेषकर पौलुस के लेखों में आम देखने को मिलता है। (देखें भजन संहिता 119:32; 1 कुरिन्थियों 9:24; फिलिप्पियों 3:14; गलातियों 5:7; 2 तीमुथियुस 4:7.) [2]एफ. एफ. ब्रूस, *द एपिस्टल टू द हिब्रूज़,* द न्यू इंटरनैशनल कमैंट्री ऑन द न्यू टैस्टामैंट (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1964), 347. [3]ब्रूक फॉस वैस्टकोट, *द एपिस्टल टू द हिब्रूज़: द ग्रीक टैक्स्ट विद नोट्स एंड ऐस्सेस* (लंदन: मैकमिलन एंड कं., 1889; रिप्रिंट, ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1973), 391. सांसारिक लेखक कई बार *martus* का इस्तेमाल '''गवाह'' या ''दर्शक'' के अर्थ में करते थे। (एक उदाहरण जोसेफस *वार्स* 6.2.5 में मिलता है।) [4]वहीं, 391. [5]फिलिप एजकुम्ब ह्युजस, *ए कमैंट्री ऑन द एपिस्टल टू द हिब्रूज़* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं. 1977), 519. [6]नील आर. लाइटफुट, *एवरीवन'स गाइड टू हिब्रूज़* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक्स, 2002), 160. प्राचीनकाल में मैराथन सामान्य दौड़ नहीं थी, स्टेडियम की दौड़ तीन मील तक की हो सकती थी इस कारण धीरज का होना महत्वपूर्ण कारक था। (क्रेग आर. कोस्टर, *हिब्रूज़: ए न्यू ट्रांसलेशन विद इंट्रोडक्शन एंड कमैंट्री,* द एंकर बाइबल, अंक 36 [न्यू यॉर्क: डबलडे, 2001], 522–23.) [7]जेम्स टी. ड्रेपर, जूनि., *हिब्रूज़, द लाइफ दैट प्लीज़ज़ गॉड* (व्हीटन, इलिनोय: टिंडेल हाउस पब्लिशर्स, 1976), 342. [8]ब्रूस, 349. ऐसी ही चर्चा नील आर. लाइटफुट, *जीज़स क्राइस्ट टुडे: ए कमैंट्री ऑन द बुक ऑफ़ हिब्रूज़* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1976), 228 में मिलती है। [9]रे सी. स्टेडमैन, *हिब्रूज़,* द IVP न्यू टैस्टामैंट कमैंट्री सीरीज़ (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोय: इंटरवर्सिटी प्रैस, 1992), 135. [10]रोम में प्रमुख व्यक्ति मंच पर कोर्स के पास बीच में बैठ जाता ताकि धावक उसे देख सकें।

[11]कैन्नथ सेमुएल वुएस्ट, *हिब्रूज़ इन द ग्रीक न्यू टैस्टामैंट फ़ॉर द इंग्लिश रीडर* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1947), 214. इसका अर्थ हो सकता है, ''अधिकार में किसी दूसरे पर निर्भर होना'' (कोस्टर, 523)। [12]रेमंड ब्राउन, *द मैसेज ऑफ हिब्रूज़: क्राइस्ट अबव ऑल,* द बाइबल स्पीक्स टुडे (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोय: इंटरवर्सिटी प्रैस, 1982), 230. [13]''पथप्रर्दशक'' (RSV; NRSV; ISV) ''कर्त्ता'' (NASB; KJV; NIV; हिंदी–अनुवादक) से कुछ बेहतर अनुवाद है। [14]ब्रूस, 352, 355. [15]वहीं, 352. [16]सिसेरो ने क्रूसारोहण को ''लज्जा का वृक्ष'' कहा (सिसेरो *डिफेंस ऑफ़ रेबिरियुस* 4.13; कोस्टर, 524 में उद्धृत)। [17]नये नियम में यह शब्द और कहीं नहीं मिलता। [18]मोसेस स्टुअर्ट, *ए कमैंट्री ऑन द एपिस्टल टू द हिब्रूज़* (लंदन: विलियम टेग एंड कं., 1856), 505. [19]लाइटफुट, *जीज़स क्राइस्ट टुडे,* 230. [20]देखें 2 कुरिन्थियों 11:25. याकूब पर पथराव किए जाने का एक विवरण जोसेफस *एन्टिक्विटीज़* 20.9.1 में दिया गया है। यदि पाठक अभी भी किसी प्रकार से यहूदी मत में शामिल थे, तो उन्हें पहले सताया नहीं गया होगा।

[21]वुएस्ट, 217. [22]कोस्टर ने कहा कि *paideuo* केवल सिखाने की प्रक्रिया ही नहीं बल्कि सिखाए जाने का

लक्ष्य भी है। उसने आगे कहा कि "सुधारना आम तौर पर शारीरिक दण्ड नहीं बल्कि ज़बानी सुधार होता था" (देखें मत्ती 18:15; 1 कुरिन्थियों 14:24; तीतुस 1:9), "कोड़े" (आयत 6) बेशक "मुख्यतया शारीरिक दण्ड के लिए इस्तेमाल होता है" (कोस्टर, 527–28)।[23]यह विचार 2 मक्काबियों 6:12, 14–16 में व्यक्त किया गया है। [24]डोनल्ड गुथरी, *द लैटर टू द हिब्रूज़: ऐन इंट्रोडक्शन एंड कमैंट्री,* द टिंडेल न्यू टैस्टामैंट कमैंट्रीज़ (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1983), 25. [25]कोस्टर, 528. [26]सी. एस. लुईस, *द प्राब्लम ऑफ़ पेन* (ऑक्सफोर्ड: पृष्ठ नहीं, 1940; रिप्रिंट, न्यू यॉर्क: मैकमिलन पब्लिशिंग कं., 1962), 93. [27]एल्बर्ट बार्नस, *नोट्स ऑन द न्यू टैस्टामैंट: हिब्रूज़ टू ज्यूड* (लंदन: ब्लैकी एंड सन, 1884–85; रिप्रिंट, ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1985), 300. [28]डायोनिसियुस ऑफ़ हेलिकारनेसुस *रोमन एन्टिक्विटीज* 2.26.2. [29]आर्थर डब्ल्यू. पिंक, *ऐन ऐक्सपोज़िशन ऑफ हिब्रूज़* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1954), 930; वाल्टर बाउर, *ए ग्रीक–इंग्लिश लैक्सिकन ऑफ द न्यू टैस्टामैंट एंड अदर अर्ली क्रिश्चियन लिटरेचर,* 3रा संस्क., संशो. व संपा. फ्रैडरिक विलियम डैंकर (शिकागो: यूनिवर्सिटी ऑफ़ शिकागो प्रैस, 2000), 749. [30]गुथरी, 253.

[31]जी. एच. लैंग, *द एपिस्टल टू द हिब्रूज़: ए प्रैक्टिकल ट्रीटाइज़ फ़ॉर प्लेन एंड सीरियस रीडर्स* (लंदन: पेटरनोस्टर प्रैस, 1951), 239. [32]NIV में यह वाक्य-रचना उद्धरण-चिह्नों में है जबकि NASB में नहीं। [33]लाइटफुट, *जीज़स क्राइस्ट टुडे,* 234. [34]स्टेडमैन, 141. [35]गुथरी, 257. [36]बारनस, 301. [37]कोस्टर, 541. [38]स्टुअर्ट, 510. [39]बूस, 365. [40]ह्यूजस, 539.

[41]बारनस, 303–4. [42]बूस, 368. [43]जेम्स थॉम्पसन, *द लैटर टू द हिब्रूज़,* द लिविंग वर्ड कमैंट्री (आस्टिन, टैक्सस: आर. बी. स्वीट कं., 1971), 171. [44]मत्ती 23:15 में इस शब्द के संज्ञा रूप (*proselutos*) का इस्तेमाल हुआ है। इस शब्द का सम्बन्ध *proserchomai* से है, जिसका अर्थ है, "के निकट जाना, राज़ी होना, या पहुंच।" [45]साइमन जे. किस्टमेकर, *एक्सपोज़िशन ऑफ़ द एपिस्टल टू द हिब्रूज़,* न्यू टैस्टामैंट कमैंट्री (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1984), 392. [46]भजन संहिता 20:2; 74:2, 3; 78:68, 69; 132:13, 14; 135:21. [47]यह शब्द बहुवचन है। रोमियों 8:29 में मसीह की बात करते हुए इसका एकवचन रूप "पहलौठा" है। [48]बूस, 376. [49]डोनल्ड गुथरी के अनुसार, संदर्भ की कोई बात इस व्याख्या की मांग नहीं करती, चाहे यह "आम सभा ... जिनके नाम स्वर्ग में लिखे हुए हैं" से मेल खाता है, जिस कारण सब उद्धार पाए हुओं का अर्थ देता है। (गुथरी, 263.) [50]*एनोक* 22:9; 41:8 में उदाहरण मिलते हैं।

[51]उद्धृत वचन को यहूदी लेखकों द्वारा पहले ही मसीहा के माना जाता था। (गरेथ एल. रीस, *ए क्रिटिकल एंड एक्सजेटिकल कमैंट्री ऑन द एपिस्टल टू द हिब्रूज़* [मोबर्ली, मिज़ोरी: स्क्रिप्चर एक्सपोज़िशन बुक्स, 1992], 231, एन. 61.) *द एक्सपोज़िटर'स बाइबल कमैंट्री,* संपा. फ्रैंक ई. गेबलिन (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: जौंडरवन पब्लिशिंग हाउस, 1981), 12:145 में लियोन मौरिस, "हिब्रूज़" में रब्बियों के स्रोतों के प्रमाण दिए गए हैं। [52]यशायाह 13 बाबुल के गिरने की बात करता है परन्तु यह किसी भी बड़ी शक्ति के अंत को भी दिखाता हो सकता है। [53]रीस, 231. [54]रॉबर्ट मिलिगन, *ए कमैंट्री ऑन द एपिस्टल टू द हिब्रूज़,* न्यू टैस्टामैंट कमैंट्रीज़ (सिनसिनाटी: चेस एंड हॉल, 1876; रिप्रिंट, नैशविल्ल: गॉस्पल एडवोकेट कं., 1975), 472. [55]NIV में यह वाक्यांश उद्धरण चिह्नों में पर NASB में नहीं। [56]बूस, 385. [57]थॉमस जी. लॉन्ग, *हिब्रूज़,* इंटरप्रेटेशन (लुईसविल्ले: जॉन नॉक्स प्रैस, 1997), 131. [58]जेम्स बर्टन कॉफ़मैन, *कमैंट्री ऑन हिब्रूज़* (आस्टिन, टैक्सस: फर्म फाउंडेशन पब्लिशिंग हाउस, 1971), 293 से लिया गया। [59]1 पतरस 1:14, 15 में, पतरस ने लैव्यव्यवस्था 11:44, 45; 19:2; 20:7 से उद्धृत किया। [60]कॉफ़मैन, 300.

[61]पॉल एलिंगवर्थ एंड यूजीन एल्बर्ट निडा, *ए ट्रांसलेटर'स हैंडबुक ऑन द एपिस्टल टू द हिब्रूज़,* हैल्प्स फ़ॉर ट्रांसलेटर्स (न्यू यार्क: यूनाइटेड बाइबल सोसायटीज़, 1983), 318.